अध्याय 2
पौलुस की सेवकाई

थिस्सलुनीके में पौलुस का अपनी सेवकाई का बचाव (2:1–12)

उसकी सेवकाई की सफलता (2:1–8)

[1]हे भाइयो, तुम आप ही जानते हो कि हमारा तुम्हारे पास आना व्यर्थ न हुआ, [2]वरन् तुम आप ही जानते हो कि पहले फिलिप्पी में दुःख उठाने और उपद्रव सहने पर भी हमारे परमेश्वर ने हमें ऐसा साहस दिया, कि हम परमेश्वर का सुसमाचार भारी विरोधों के होते हुए भी तुम्हें सुनाएँ। [3]क्योंकि हमारा उपदेश न भ्रम से है और न अशुद्धता से, और न छल के साथ है; [4]पर जैसा परमेश्वर ने हमें योग्य ठहराकर सुसमाचार सौंपा, हम वैसा ही वर्णन करते हैं, और इस में मनुष्यों को नहीं, परन्तु परमेश्वर को, जो हमारे मनों को जाँचता है, प्रसन्न करते हैं। [5]क्योंकि तुम जानते हो कि हम न तो कभी चापलूसी की बातें किया करते थे, और न लोभ के लिये बहाना करते थे, परमेश्वर गवाह है; [6]और यद्यपि हम मसीह के प्रेरित होने के कारण तुम पर बोझ डाल सकते थे, तौभी हम मनुष्यों से आदर नहीं चाहते थे, और न तुम से, न और किसी से। [7]परन्तु जिस तरह माता अपने बालकों का पालन-पोषण करती है, वैसे ही हम ने भी तुम्हारे बीच में रहकर कोमलता दिखाई है; [8]और वैसे ही हम तुम्हारी लालसा करते हुए, न केवल परमेश्वर का सुसमाचार पर अपना अपना प्राण भी तुम्हें देने को तैयार थे, इसलिये कि तुम हमारे प्रिय हो गए थे।

आयत 1. आना का यूनानी शब्द, εἴσοδος (*एइसोडोस*), पौलुस थिस्सलुनीके में प्रचार के लिये "मिलने आने" (NIV) को दर्शाता है। 1:9 में इसी शब्द का "आने पर स्वागत" अनुवाद किया गया है (NASB; NIV)। पौलुस ने कहा कि उन भाइयों के पास उसका आना उनके लिये लाभ की बात थी। संभवतः पौलुस ने अपने आने पर उनके द्वारा स्वागत के सन्देश से बढ़कर सुसमाचार के सामर्थ्य पर बल दिया, जिसका प्रचार उसने तब किया था, जब वह उनके पास आया था।[1] वह सुसमाचार ही था जिसने उसके आने के उद्देश्य

को पूरा किया। थिस्सलुनीके की कलीसिया भली-भाँति जानती थी कि पौलुस का उनके पास आना **व्यर्थ** नहीं था। "व्यर्थ" शब्द का अनुवाद κενός (*केनोस*), से किया गया है जिसका अर्थ "बिना उद्देश्य के" या "निष्फल" होता है। एक बार फिर, उसने उन्हें **भाइयों** कहकर सम्बोधित किया।

आयत 1:5 के वाक्यांश में "तुम जानते हो कि हम तुम्हारे लिये तुम्हारे बीच में कैसे बन गए थे" **और तुम आप ही जानते हो** थिस्सलुनीके नगर के झूठे शिक्षक कुछ लोगों को भरमा रहे थे कि पौलुस धन के लिये प्रचार करता था (जैसा की बहुत से लोगों ने उस दिन किया)। पौलुस ने जिसका उत्तर यह कहते हुए दिया कि "तुम जानते हो कि जो ये कह रहे हैं उसकी तुलना में मैं कैसे रहा और प्रचार किया।" जिससे कि यह वर्णन सही हो, सम्भावना अच्छी हो, विशेषकर निम्नलिखित आयतों के दृष्टिकोण से जिसके उद्देश्यों और चर्चा से पता चलता है कि पौलुस उनके साथ छल करने का प्रयास कर रहा था या नहीं।

आयत 2. थिस्सलुनीके नगर जाने से कुछ समय पहले, पौलुस ने **फिलिप्पी में दुःख उठाया और उपद्रव सहा** (देखें प्रेरितों 16:16–40)। जिसमें बेंत से मारे जाने और बंदीगृह तथा भीतर की कोठरी में रखे जाने की बात थी (प्रेरितों. 16:23, 24)। फिर पौलुस ने कहा, **वरन् तुम आप ही जानते हो**, क्योंकि वह उन्हें इन सब बातों के बारे में बता चुका था - सम्भवतः तब जब वह उनके साथ था।

बीते समय में फिलिप्पी में दुःख उठाने के हुए अनुभव के बाद भी, पौलुस और उसके सहकर्मियों ने **परमेश्वर का सुसमाचार** प्रचार करने में **साहस** दिखाया ("साहसी थे"; KJV) (देखें 1:5 पर चर्चा)। "साहस" यूनानी शब्द παρρησιάζομαι (*पार्रेसिआज़ोमाइ*) से लिया गया है जिसका अर्थ है "खुलकर अपनी बात कहना"।[2] थिस्सलुनीके में पौलुस तथा दूसरे लोगों ने भी **भारी विरोधों** का सामना किया। विरोध यूनानी शब्द ἀγών (*अगोन*) से आता है। "अगोन ... यूनानी खेलकूद प्रतियोगिता के लिये उपयोग किया जाता था।"[3] बाहरी क्लेश जैसे फिलिप्पियों 1:30 या आंतरिक चिंता ([जैसे] कुलुस्सियों 2:1)"[4] में इसका उपयोग किया गया है। दिए गए सन्दर्भ में, पौलुस ने यहाँ पर बाहरी क्लेश पर अधिक जोर देते हुए इसका किया था।

पौलुस ने इस प्रकार तर्क दिया: यदि वह और उसके सहकर्मी दृढ़ नहीं होते, तो वे इस क्लेश का सामना करने से पीछे हट चुके होते। क्योंकि उन्होंने प्रचार कार्य बंद नहीं किया, तार्किक परिणाम यह है कि वे दृढ़ता के साथ आगे बढ़ रहे थे। वे केवल [अपने] **परमेश्वर में** साहस के द्वारा आगे बढ़ने में सक्षम थे। उसने इन सब बातों को उनके लिये संभव बनाया, जैसा वह हमारे लिये भी करता है (मत्ती 28:20; 2 थिस्सलुनीकियों 3:16)।

आयत 3. थिस्सलुनीके में कुछ झूठे शिक्षकों के द्वारा पौलुस पर कई तरह

के झूठे आरोप लगाए गए थे उसने उसका उत्तर देना शुरू किया (देखें चर्चा आयत 1 पर)। ये शिक्षक "भ्रम," "अशुद्धता" और "छल" के पाप में पाए जाते थे, इस कारण उन्होंने पौलुस पर भी वैसा ही आरोप लगा दिया।

उपदेश यूनानी शब्द παράκλησις (*पाराक्लेसिस*) से आता है, NIV में जिसका अनुवाद "विनती" किया गया है। यह शब्द क्रिया παρακαλέω (*पाराकालेओ*) का संज्ञा रूप है जिसका अनुवाद 3:2 में "प्रोत्साहित करना" किया गया है। यह थिस्सलुनीके में पौलुस के द्वारा किये गए प्रचार के सन्देश के विषय को बताता है। पौलुस ने कहा विशेष रूप से जो "विनती हम करते हैं" (NIV), **भ्रम** या **अशुद्धता** या **छल** से अछूता रहे। गलत शिक्षा "भ्रम" के समान लगती है (2 थिस्सलुनीकियों 2:11)। इसके साथ ही, सम्भवत: वह नैतिक अशुद्धता के बारे में बता रहा था, जिस प्रकार अवैध यौन गतिविधियाँ जो बहुत से पराए देवताओं के मंदिरों पाई जाती थीं, जैसे कुरिन्थुस के अफ्रादिता के मंदिर में। यहूदी अकसर मसीहियों पर इस तरह की बातों से प्रेरित होने का दोष लगते थे। पौलुस यह स्पष्ट करना चाहता था कि उसके सन्देश में "छल" या "कपट" (RSV) मिला हुआ नहीं है। "छल" शब्द δόλος (*डोलोस*) से आता है जिसका अर्थ "चापलूसी तथा छल का प्रयोग करके लाभ उठाना"[5] होता है। घूम-घूम कर प्रचार करने वाले बहुत से लोगों का इस प्रकार का चरित्र हुआ करता था, जो अपने श्रोतागणों से अपनी जीविका प्राप्त करते थे, जिस प्रकार आज के टेलीविज़न पर प्रचार करनेवाले जो बार-बार पैसों की माँग करते हैं।

पौलुस ने कहा, "हमारा उद्देश्य ये नहीं हैं," और संकेत किया कि, "तुम आप ही जानते हो कि यह सत्य है।"

आयत 4. पौलुस और उसके सहकर्मियों ने वह नहीं किया था जो आरोप उन पर लगाए गए थे (आयत 3); बल्कि, उन्होंने **परमेश्वर** द्वारा **योग्य ठहराए गए** मनुष्यों के समान **वर्णन** (उचित कार्य) किया। "योग्य ठहराए गए" यूनानी शब्द की एक "पुरानी क्रिया" δοκιμάζω (*डोकिमाजो*) से आता है, जिसका अर्थ "परीक्षा में डालना" होता है। जिस काल का उपयोग किया गया है वह "पूर्ण अवस्था" को बताता है, अर्थ है "जाँचा और परखा,"[6] ताकि वर्तमान समय में वे परमेश्वर के परखे दास के समान खड़े होकर उसके सन्देश का प्रचार करें (देखें 1 शमूएल 16:7)। पौलुस का तात्पर्य यह था कि उसके कार्य और उसके सन्देश को परीक्षा के द्वारा आज्ञा मिली है (देखें NIV में 5:21, जहाँ पर शब्द का अनुवाद "परीक्षा" किया गया है)। यह परीक्षा परमेश्वर के द्वारा थी, जो कोई गलती नहीं करता। पौलुस का उद्देश्य अशुद्धता से बिल्कुल दूर था।

परमेश्वर ने सुसमाचार सन्देश कार्य पौलुस और उसके जैसे दूसरे लोगों को **सौंपा** था (देखें रोमियों 1:1)। वास्तव में, पौलुस पर छल द्वारा लाभ उठाए जाने का दोष कभी भी नहीं लगाया जा सकता था, क्योंकि उसने तो **मनुष्यों**

को प्रसन्न करने का कभी प्रयास भी नहीं किया; जबकि, उसने परमेश्वर की इच्छा को जानना चाहा **जो हमारे मनों को जाँचता है** (देखें यिर्मयाह 11:20)। पौलुस दूसरे मनुष्यों द्वारा उसके ऊपर लगाए गए दण्ड की आज्ञा को लेकर थोड़ा चिंतित था, परन्तु वह अपने परमेश्वर के सामने खड़े होने के लिये तैयार था (देखें 1 कुरिन्थियों 4:5)।

आयत 5. पौलुस ने इस बात का खण्डन किया कि वह और उसके सहकर्मी थिस्सलुनीकियों के साथ **चापलूसी की बातें** करते थे। "चापलूसी" झूठी प्रशंसा की बातें होती है, जिस पर उद्देश्यों की सार्थकता के लिये गंभीरता से विश्वास नहीं किया जाता था। कुछ प्रचारक अपने लाभ के लिये भाइयों को अपनी ओर करने, या महान प्रचारकों के रूप में प्रशंसा पाने के लिये इस प्रकार किया करते थे। हम सभी को ध्यान रखना चाहिए कि हमें ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए जिसका कोई अर्थ न हो। जब कोई भाई किसी विवाद के विषय पर आपका विचार माँगता है, तो क्या आप उससे अधिक घनिष्ट होने के कारण उसकी बातों पर सहमत होते हैं, जबकि वास्तविकता में आपके और उसके विचार अलग-अलग होते हैं? इसे ही चापलूसी कहते हैं। ऐसा करके हम गम्भीरता को नहीं समझ पाते और अपने भाइयों को हानि पहुँचाते हैं।

वाक्यांश **लोभ के लिये बहाना** में, "बहाना" यूनानी शब्द πρόφασις (*प्रोफासिस*) से आता है। "अन्य जगहों पर प्रयोग [इस शब्द का] (प्रेरितों. 27:30; लूका 20:47; फिलिप्पियों 1:18) यह शब्द, झूठे कारण को आगे बढ़ाते जाना या सच बात को छुपाने के लिये बाहरी रूप से अच्छा बनना दिखाता है।"[7] पौलुस ने इस बात का खण्डन किया कि वह और उसके सहकर्मी अपने लोभ के कारण आये हैं, या वे इसे "ईश्वरीय कार्य" जताकार बाहरी आडम्बर से छिपाने का प्रयास कर रहे हैं।

"लोभ के लिये बहाना" वास्तव में चापलूसी का वृहत रूप है जिसमें मनुष्य अपना काम निकालने के लिये सच्चाई पर पर्दा या मुखौटा लगा लेता है। पौलुस आरोप से संवेदनशील हो गया था कि थिस्सलुनीकियों के लिये प्रशंसा की भावना में उसकी गंभीरता लालच का एक मुखौटा था। "लोभ" भौतिक वस्तुओं को पाने की असीम इच्छा होती है। इसे पाने के लिये जो भी जरूरी हो लोगों को वह करने के लिये यह विवश कर देता है। पौलुस ने कहा जब वे थिस्सलुनीके में थे तब अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिये उनकी ऐसी कोई भी इच्छा नहीं थी। और उनके पक्ष में **परमेश्वर गवाह है** (इब्रानियों 6:18; 1 यूहन्ना 5:9)। ये सब उस सन्दर्भ के कुछ लोगों के कारण था जो पौलुस को बुरी युक्ति करने वाला मनुष्य होने का आरोप लगा रहे थे (आयत 1)।

आयत 6. लोभ की इच्छा से दूर, पौलुस ने कहा कि, वह **मनुष्यों से आदर** ("प्रशंसा"; NIV) नहीं चाहता, उनसे जो थिस्सलुनीके के लोग कहलाते हैं। और

न ही वह **किसी से** चाहता था, जबकि उसके **प्रेरित होने के कारण** उस पर बड़ी भारी आज्ञा सौंपी गई थी। "बोझ" यूनानी शब्द βάρος (*बारोस*) से लिया गया है। जिसका प्रयोग सब के लिये और अर्थ बड़ी भारी आज्ञा देना होता है। कुछ लोग मानते हैं कि इसका अर्थ "कष्टप्रद" वही जो परिश्रम का फल प्राप्त करने में होता है (2:9)। NIV और NASB का फुटनोट "कष्ट" या "कष्टप्रद" का वैकल्पिक अनुवाद देते हैं। आई. हॉवर्ड मार्शल ने कहा, यह प्रेरितों के आज्ञा देने के अधिकार को बताता है।[8] **प्रेरित** बहुवचन है, "भेजा गया" का वृहत रूप का प्रयोग किया गया है। तीमुथियुस और सीलास इसलिये "प्रेरित" थे, क्योंकि उन्हें परमेश्वर से यह अधिकार मिला था (प्रेरितों 14:14 की तुलना में)।[9]

आयत 7. पौलुस ने कहा थिस्सलुनीके के लोग उसके और उसके सहकर्मियों के लिये कभी भी बोझ नहीं थे, बल्कि पौलुस ने **जिस तरह माता** [जो] **अपने बालकों का पालन-पोषण करती है,** वैसे ही **कोमलता** [उनके प्रति] दिखाई थी। यहाँ पर "कोमलता" का यूनानी शब्द νήπιος (*नेपिओस*) है और जिसका अर्थ "मिलनसार" होता है अर्थात् वह मनुष्य जो पहुँच रखता हो।[10] "पालन-पोषण करने वाली माता" ये शब्द τροφός (*ट्रोफोस*) से आते हैं, बोलचाल की भाषा में जिसका अर्थ "देखभाल करने वाली" होता है। इसलिये बच्चों को "उसके अपने" कहा जाता है, वाक्यांश "पालन-पोषण करने वाली माता" एक अच्छा चित्रण है। "चिंता करना" θάλπω (*थाल्पो*) से आता है, जो एक मजबूत भावनात्मक बंधन को दर्शाता है। जबकि, पौलुस को स्वयं की तुलना एक पिता से करना था (आयत 11; 1 कुरिन्थियों 4:15), परन्तु यहाँ पर उसने अपनी तुलना एक माता से की यह समझाने के लिये कि वह और उसके सहकर्मी कितने कोमल थे जो ज्यादा कुछ माँग न रखते थे। कोमलता के लिये उसने वह प्रतिरूप दिया जिसमें मनुष्य उसे देख सकता है।[11]

आयत 8. पौलुस ने **परमेश्वर का सुसमाचार** बाँटा (मेलमिलाप का सुसमाचार जो परमेश्वर से आता है), परन्तु भाइयों के लिये उसका प्रेम इतना गहरा था कि वह और उसके सहकर्मियों उन्हें बचाने के लिये अपने **प्राण** दे सकते थे, जिस प्रकार वह अपने यहूदी भाइयों के लिये दे सकता था (रोमियों 9:1–3)। यूनानी शब्द ψυχή (*सूखे)* का अनुवाद "जीवन" किया गया है। "इसका अर्थ बस इतना ही नहीं है कि 'हम तुम्हारे लिये अपना जीवन देने (अर्पित करने) की इच्छा रखते थे' परन्तु 'हम अपने आपको तुम्हारे लिये देना चाहते हैं, बिना किसी शर्त के, अपने आपको तुम्हारी जगह रखना चाहते हैं।'"[12] उन्होंने "कुछ नहीं रख छोड़ा"[13] यह मनन, यदि जरुरी हो तो अपना जीवन दे देने के बारे में बताता है, परन्तु इसका अभिप्राय इससे भी बढ़कर है। पौलुस का इस कार्य में घुसना केवल अनुभव प्राप्त करना नहीं था; परन्तु भावनात्मक भी था।

उसकी सेवकाई की विश्वसनीयता (2:9–12)

9क्योंकि, हे भाइयो, तुम हमारे परिश्रम और कष्ट को स्मरण रखते हो; हम ने इसलिये रात दिन काम धन्धा करते हुए तुम में परमेश्वर का सुसमाचार प्रचार किया कि तुम में से किसी पर भार न हों। 10तुम आप ही गवाह हो, और परमेश्वर भी गवाह है कि तुम विश्वासियों के बीच में हमारा व्यवहार कैसा पवित्र और धार्मिक और निर्दोष रहा। 11तुम जानते हो कि जैसा पिता अपने बालकों के साथ व्यवहार करता है, वैसे ही हम भी तुम में से हर एक को उपदेश करते, और शान्ति देते, और समझाते थे 12कि तुम्हारा चाल-चलन परमेश्वर के योग्य हो, जो तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाता है।

आयत 9. यह आयत हमें आयत 3 का स्मरण कराता है, ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ पौलुस पर थिस्सलुनीकियों के साथ "छल" करने का प्रयास करने का दोष लगाया गया था। परन्तु, यहाँ पौलुस इसकी बजाय कि वह उन दूसरों को अपना आकलन करने की अनुमति देता जो उपस्थित नहीं थे, कहता है कि निश्चय ही **भाई** स्वयं उसके **परिश्रम और कष्ट** को **स्मरण** कर सकते हैं। उन्होंने स्वयं की सहायता के लिये यह कार्य किया था (प्रेरितों 18:3; 2 थिस्सलुनीकियों 3:7–10) ताकि थिस्सलुनीकियों पर आर्थिक रूप से **भार** न हो। वास्तव में, पौलुस सुसमाचार प्रचार कार्य एवं भोजन की व्यवस्था हेतु **रात और दिन** दोनों समय व्यस्त था। "परिश्रम" का यूनानी शब्द κόπος (*कोपोस*), कड़ी मेहनत, थका देने वाली काम की प्रवृत्ति को व्यक्त करता है, और "कठिनाई" के लिये यूनानी शब्द μόχθος (*मुकथोस*), इसकी पीड़ा या दर्द को व्यक्त करता है। "कोई संदेह नहीं कि, दोनों का महत्व होने पर रात और दिन का परिश्रम जरूरी था।"[14] उन्होंने स्मरण रखा होगा कि यदि पौलुस का उद्देश्य उनसे लाभ कमाना होता, तो वह अच्छी तरह से सफल नहीं हो पाता।

आयत 10. पौलुस ने कहा, कि जब भाई लोग फिर से सोचें तो वे उसके पक्ष में चरित्र के **गवाह** होंगे और कहेंगे कि उसका व्यवहार **पवित्र** (परमेश्वर की सेवा के लिये समर्पित किया हुआ), **धार्मिक** (परमेश्वर के नियमानुसार चला) और **निर्दोष** (परमेश्वर के नियमों का उल्लंघन करने का दोष लगाया नहीं जा सकता) रहा। "निर्दोष" (ἀμέμπτως, *अमेम्पतोस*) "पवित्र" और "धार्मिकता" के समान ही होता है, परन्तु नकारात्मक शब्द भाव से। निर्दोष मनुष्य वह होता है "जो दिए गए माआयतण्ड में बिना निन्दा के खरा उतरता है।"[15]

यह थिस्सलुनीकियों के बीच उसके व्यवहार को संक्षिप्त में बताता है। इस प्रभावशीलता के वे गवाह थे, और **परमेश्वर भी**, जो सब कुछ देख रहा है।

मसीही लोगों को **विश्वासियों** भी कहा जाता है।

आयत 11. आयत 7 में, पौलुस ने कहा कि उनके लिये वह एक "माता के समान है" परन्तु यहाँ पर उसने **पिता** का प्रतिरूप प्रस्तुत किया है, जो **अपने बालकों** के साथ काम कर रहा है। वह कोमलता वर्णन कर रहा था जिसका प्रयोग उसने किया था, जो हमेशा मातृत्व के लिये अधिक जाना जाता है। यहाँ पर, वह उन कार्यों का वर्णन कर रहा था, जो एक पिता को करना होता है। पारिवारिक छवि का प्रयोग कर बताना चाहता था कि वह उन्हें कितना प्रिय समझता था (जैसे एक बच्चे के लिये उसके माता-पिता) और उसका यह रिश्ता उनमें से **हर एक** के साथ था, न कि वह उन सब के साथ एक समूह के रूप में था। जैसे एक पिता करता है, वह हमेशा **शान्ति** देता या अपने बच्चों के लिये हृदय निछावर करता था। वह निरन्तर **उपदेश** भी देता था (सहायता के लिये हरेक को बुलाता) और परमेश्वर के योग्य जीवन जीने के लिए **समझाता** था (आयत 12)।

"समझाते" यूनानी शब्द μαρτύρομαι (*मरतुरोमई*), "का एक क्रिया शब्द है जिसका सही अर्थ 'एक गवाह को आगे बढ़ाना' होता है और इसलिये 'सच्चाई से घोषणा करना' (हो सकता है गवाह बनने के लिये परमेश्वर की बुलाहट की सोच के साथ)। ... यह आलसी या उसी के समान लोगों को सम्बोधित किए गए कठोर शब्दों का प्रयोग हो सकता है।"[16]

आयत 12. परमेश्वर जिसने पौलुस से बात की और वह वही है **जो तुम्हें** (कलीसिया; मत्ती 16:18; कुलुस्सियों 1:13) **अपने राज्य में बुलाता है** (वह अपने सुसमाचार के द्वारा सभी लोगों को बुलाता है, 2 थिस्सलुनीकियों 2:14)। हम उसकी कलीसिया "में" बपतिस्मा पाए हुए हैं, जो उसकी देह है (रोमियों 6:3, 4; कुलुस्सियों 1:18)। एक प्रकार से, मसीही परमेश्वर की महिमा को पृथ्वी पर प्रगट करते हैं (2 कुरिन्थियों 3:18), परन्तु हम न्याय के बाद उससे भी बड़ी महिमा को प्रगट करेंगे (कुलुस्सियों 3:4; 1 पतरस 5:10)।

उसकी सेवकाई और सन्देश पर थिस्सलुनीकियों की प्रतिक्रिया (2:13–16)

[13]इसलिये हम भी परमेश्वर का धन्यवाद निरन्तर करते हैं कि जब हमारे द्वारा परमेश्वर के सुसमाचार का वचन तुम्हारे पास पहुँचा, तो तुम ने उसे मनुष्यों का नहीं परन्तु परमेश्वर का वचन समझकर (और सचमुच यह ऐसा ही है) ग्रहण किया; और वह तुम विश्वासियों में जो विश्वास रखते हो, प्रभावशील है। [14]इसलिये तुम, हे भाइयो, परमेश्वर की उन कलीसियाओं की सी चाल चलने लगे जो यहूदिया में मसीह यीशु में हैं, क्योंकि तुम ने भी अपने लोगों से

वैसा ही दुःख पाया जैसा उन्होंने यहूदियों से पाया था, 15जिन्होंने प्रभु यीशु को और भविष्यद्वक्ताओं को भी मार डाला और हम को सताया, और परमेश्वर उन से प्रसन्न नहीं, और वे सब मनुष्यों का विरोध करते हैं, 16और वे अन्यजातियों से उनके उद्धार के लिये बातें करने से हमें रोकते हैं कि सदा अपने पापों का नपुआ भरते रहें; पर उन पर परमेश्वर का भयानक प्रकोप आ पहुँचा है।

आयत 13. फिर, पौलुस ने वर्णन किया कि वह **निरन्तर** या बार-बार, **परमेश्वर का धन्यवाद** करेगा और जिस प्रकार से थिस्सलुनीकियों ने **वचन ग्रहण किया,** उसके लिए उनकी बड़ी प्रशंसा की।

"क्रिया [यूनानी] [παρπλαμβάνω] पारालाम्बानो, 'ग्रहण करना' और इसका परस्पर सम्बन्धी शब्द [παραδίδωμι] पाराडिडोमी, 'सुपुर्द करना' मसीही विश्वास का ग्रहण और प्रेषण के लिये दोनों ही लगभग एक ही समान तकनीकी शब्द थे।"[17] आयत के अगले हिस्से में, पौलुस ने कहा **परमेश्वर का वचन** उनमें **प्रभावशील** है। "पूरा करना" का अनुवाद यूनानी शब्द ἐνεργέω (एनेर्गेओ) से किया गया है। "RSV क्रिया को मध्यम पुरुष में बताता है ('कार्य जारी है,' यूनानी एनेर्गेइटाई), परन्तु यह अकर्मक (कार्य का पूरा न होना) भी हो सकता था: 'कार्य को पूरा किया गया (विशेषकर परमेश्वर द्वारा)'; अर्थात् अधिक प्रभावित नहीं कर पाया।"[18]

जब पौलुस और उसके सहकर्मियों ने वहाँ प्रचार किया, जो प्रचार किया गया उसके सन्देश को थिस्सलुनीकियों ने सिर्फ इस लिये ग्रहण नहीं किया क्योंकि वे पौलुस या उसके साथियों को पसंद करते थे। उन्होंने जो ग्रहण किया **मनुष्यों का वचन** नहीं था; परन्तु, उन्होंने सन्देश को इसलिये ग्रहण किया क्योंकि वे जान चुके थे कि वह परमेश्वर का वचन था। उन्होंने बिल्कुल सही किया क्योंकि वह **सचमुच** परमेश्वर की ओर से था। उसका वचन उनमें "अपने कार्य" को पूरा कर रहा था (इफिसियों 3:20; कुलुस्सियों 3:16; इब्रानियों 4:12 की तुलना में) जिस प्रकार उन सब में जो उस पर विश्वास करते हैं अर्थात् वे सब जो मसीही हैं।

आयत 14. परिवार का प्रतिरूप फिर से प्रभावशाली है। वे पौलुस और उसके सहकर्मियों के **भाई बन्धु** थे। इन भाइयों को **परमेश्वर की कलीसियाओं के सदृश बनने,** या "पीछे चलने वाले" बनने (KJV) के लिये कहा गया था ("परमेश्वर के लोग"; प्रेरितों 20:28)। यह संबोधन उचित या औपचारिक नाम नहीं है। NIV में "परमेश्वर की कलीसियाएं" लिखा है। ये कलीसियाएँ **यहूदिया** में थी, जो पलिस्तीन का दक्षिणी प्रान्त है जहाँ यरूशलेम स्थित है। वे **मसीह यीशु में** भी थे, जहाँ उद्धार है (2 तीमुथियुस 2:10) और जहाँ पर एक मनुष्य

को बपतिस्मा द्वारा मिला दिया जाता है (रोमियों 6:3, 4)।

वे यहूदिया की कलीसियाओं के सदृश्य बन चुके थे, जिसमें वही पलिस्तीनी यहूदी मसीही अपने ही यहूदी भाइयों के हाथों सताव सहते थे (प्रेरितों 5:27–42; विशेषकर आयत 40)। अब ये गैर यहूदी मसीही **अपने ही स्थानीय लोगों** के हाथों दुःख पा रहे थे। "तुम्हारे अपने लोग" यह भाव यूनानी शब्द συμφυλέτης (*सुम्फुलेतेस*) से लिया गया है, "भौगोलिक क्षेत्र का कुछ हिस्सा और थिस्सलुनीके नगर के यहूदियों को मिलाकर हो सकता है, परन्तु विरोध में यह एक बड़े गैर यहूदी तत्व की ओर इशारा करता है।"[19] तो भी, ये थिस्सलुनीके के यहूदी ही थे जिन्होंने थिस्सलुनीके में मसीहियों के विरुद्ध शुरूआती विद्रोह को भड़काया था (प्रेरितों 17:1–9)।

आयत 15. आयत 14 के अंत में यहूदियों के नाम का उल्लेख हुआ है, पौलुस ने उनके व्यवहार के बारे में खरा- खरा और सीधा-सीधा निन्दा के योग्य समझा जाना बताया, जिसमें सिर्फ पलिस्तीनी यहूदी नहीं थे, परन्तु सभी यहूदी सामान्य रूप से शामिल हैं। पौलुस के सभी लेखों में से यह निःसंदेह किसी मनुष्य में सबसे अधिक स्पष्ट दोषारोपण वाला भाग है। पौलुस अपने संगी यहूदियों को प्रेम करता था (रोमियों 9:1–5), परन्तु यह वही प्रेम था जो चाहता था कि वह उनके बुरे व्यवहार के विरुद्ध बोले। उसे यह प्रमाणित करना था कि जो भी मनुष्य अपना चाल-चलन इन यहूदियों के समान रखता था, वह केवल मसीह का ही इनकार नहीं करता परन्तु परमेश्वर और जो कुछ वह करता है का भी इनकार करता था।

पौलुस ने कहा यहूदियों ने **प्रभु यीशु को मार डाला**। वे उसे रोमी अधिकारियों के पास लाए जिन्होंने पिलातुस की इच्छा के विरुद्ध जाकर उसे मार डाला क्योंकि वे ऐसा ही चाहते थे (मत्ती 27:15–26; प्रेरितों 2:22–24)। उसने कहा उन्होंने **भविष्यद्वक्ताओं को** भी मार डाला। जहाँ मत्ती 23:29–32 उनके द्वारा "भविष्यद्वक्ताओं की हत्या" बारे में बताता है, वहीं प्रेरितों 7:51, 52. लूका 11:47–51 में भी इसका वर्णन मिलता है, जिसमें एक धर्मी भविष्यद्वक्ता, "जकर्याह, जो वेदी और परमेश्वर के मन्दिर के बीच में घात किया गया" (आयत 51)। यह भविष्यद्वक्ता वह जकर्याह नहीं है जिसने पुराने नियम में इस नाम की पुस्तक लिखी थी। परन्तु, यह वही था जिसका वर्णन 2 इतिहास 24:20, 21 में पाया जाता है; जिस पर "पथराव किया गया था।" यिर्मयाह एक और अन्य भविष्यद्वक्ता था जिसे बंदीगृह में डाला गया और जिसे कई बार मृत्यु का सामना करना पड़ा।

पौलुस ने कहा **यहूदियों ने** उन्हें **सताया था**। KJV में लिखा है "हमें सताया गया।" यहाँ, उसने थिस्सलुनीके नगर में हुए अपने अनुभव को बताया जब उसने और उसके सहकर्मियों ने दुःख उठाया (प्रेरितों 17:1–10)। उसने कहा

कि पुत्र को ग्रहण न करके उन्होंने **परमेश्वर को प्रसन्न नहीं किया**; इस प्रकार, उन्होंने पिता का भी आदर नहीं किया (यूहन्ना 5:22–24; इब्रानियों 11:6)। अन्त में उसने कहा **कि वे सब मनुष्यों का विरोध** करते थे। जब पौलुस ने यहूदियों पर "सब मनुष्यों का विरोध करने वाले" की छाप लगाई, तब उसने स्वयं को उनमें शामिल नहीं किया जो यहूदियों पर मानव-जाति से घृणा करने का दोष लगाते थे। परन्तु, पौलुस जिस विरोध की बात कर रहा था वह उन यहूदी विश्वासियों के बारे में था जो अन्यजातियों के बीच सुसमाचार के प्रचार करने का विरोध करते थे।[20]

आयत 16. पौलुस अन्य-जातियों तक सुसमाचार के पहुँचाने पर यहूदियों के विरोध (आयत 15) के बारे में विशेषकर बात कर रहा था जिसे इस आयत में देखा जा सकता है। उसने कहा कि **वे अन्यजातियों से उनके उद्धार के लिये बातें करने से हमें रोकते हैं।** प्रेरितों 22:21, 22 में, यहूदी पौलुस की बात परमेश्वर ने उसे "अन्य-जातियों" के पास भेजा है कहते तक सुनते रहे और जब वह ऐसा कह चुका, वे ऊँचे शब्द से चिल्लाए, "ऐसे मनुष्य का अंत करो ... ।"

"अन्यजातियों" का यूनानी शब्द ἔθνος (*एथनोस*) है, जिसका प्रायौगिक अर्थ "जातियाँ" है और यहूदी जाति को छोड़कर इसका प्रयोग सभी जातियों के लिये होता है या "जैसा कि वे इसे अब्राहम की वाचा से बाहर की जातियाँ समझते थे।"[21]

बहुत से अनुच्छेद अन्यजातियों को परमेश्वर के राज्य से बाहर रखने के यहूदियों के स्वार्थ को प्रगट करते हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि, वे अपने को सबसे उच्च कुल के लोग समझते थे। वे "जलते" थे (प्रेरितों 13:42–45), परमेश्वर का पूरा ध्यान चाहते थे। इसलिये पौलुस ने कहा कि, "वे सदा अपने पापों का ढेर चरम सीमा तक लगाते रहें" (NIV) या **वे सदा अपने पापों का नपुआ भरते रहें**। एक के ऊपर दूसरी अनाज्ञाकारिता को बढ़ा रहे थे। पौलुस ने उन्हें चेतावनी दी कि परमेश्वर की सहनशीलता की एक सीमा है और उन्हें अवश्य ही दण्ड मिलेगा।

पौलुस ने कहा, पर **उन पर भयानक प्रकोप** [परमेश्वर का भयानक प्रकोप] **आ पहुँचा है**। "प्रकोप" यूनानी शब्द ὀργή (*ओरगे*) है, जो वास्तव में परमेश्वर के नियम के विरुद्ध किसी भी प्रकार का बलवा करने पर परमेश्वर का कठोर निर्णय होता है। यहाँ पर इस शब्द का तात्पर्य दण्ड से है, क्योंकि उसका निर्णय अनाज्ञाकारी के सिर पर दण्ड के रूप में आ गिरेगा। यह तो तय था कि परमेश्वर उन्हें दण्ड दे जिसे पौलुस ने भूतकाल में कहा था जबकि वह पहले ही दे चुका है। यशायाह 53:5 इसी के समान एक उदाहरण है, जहाँ यह कहा गया है, "उसे भेदा गया" (वर्णन दिया गया है)। वे "क्रोध और परमेश्वर का धर्म से न्याय प्रगट करने के दिन के लिये क्रोध कमा रहे" थे (रोमियों 2:5, 6)। यह दण्ड

यहूदी राष्ट्र का विनाश लेकर 70 ई. (तीतुस के अधीन) में पहली बार दण्ड की घटना के रूप में सामने आया, और अंतिम न्याय में यह अपने पूरे भयानक रूप में घटित होगा। "भयानक" यूनानी शब्द τέλος (*टेलोस*) से लिया गया है, जिसका अर्थ सम्भवतः यह है कि "अंततः" परमेश्वर का क्रोध या प्रकोप उन पर आ पहुँचा है।[22]

उनमें पौलुस की अपार इच्छा (2:17–20)

[17]हे भाइयो, जब हम थोड़ी देर के लिये, मन में नहीं वरन् प्रगट में, तुमसे अलग हो गए थे, तो हम ने बड़ी लालसा के साथ तुम्हारा मुँह देखने के लिये और भी अधिक यत्न किया। [18]इसलिये हम ने (अर्थात् मुझ पौलुस ने) एक बार नहीं वरन् दो बार तुम्हारे पास आना चाहा, परन्तु शैतान हमें रोके रहा। [19]भला हमारी आशा या आनन्द या बड़ाई का मुकुट क्या है? क्या हमारे प्रभु यीशु के सम्मुख उसके आने के समय तुम ही न होगे? [20]हमारी बड़ाई और आनन्द तुम ही हो।

आयत 17. एक बार फिर, पारिवारिक भावना को पौलुस के द्वारा उन्हें भाइयो कहे जाने पर व्यक्त किया गया। पौलुस ने कहा, **वह थोड़ी देर के लिये** उनसे **अलग हो गया था** ("बिछड़ गया था"; NIV), जो इस बात की ओर संकेत करता है कि पौलुस को जबरन उनसे अलग किया गया था (प्रेरितों 17:1–10)। Ἀπορφανίζω (*अपोरफानिजो*), का अनुवाद "अलग हो गए" किया गया है, जिसका प्रायौगिक अर्थ "आपसे वंचित हो गए"[23] होता है। Καιρός ὥρα (*काईरोस होरा*) जिसका प्रायौगिक अर्थ "एक घंटा का समय" है, परन्तु, इसका अनुवाद "थोड़ी देर के लिये" बिल्कुल सही किया गया है। सम्भवतः यह कुछ ही महीनों की बात थी।

पौलुस एक माता/पिता के समान दुखी हो गया जिसका बच्चा जबरन उससे छीन लिया जाता है, परन्तु **मन में** वह उनसे दूर नहीं था। अभिप्राय यह है, कि वह अपने भाइयों के साथ ही था। उसकी **बड़ी लालसा** थी कि वह उन्हें फिर से देखे, यद्यपि, वह उनसे बस "थोड़ी देर के लिये" ही अलग हुआ था। वह उनके पास आने से छिप रहा था, क्योंकि सम्भवतः यहूदी लगातार उसे ढूंढ रहे थे (प्रेरितों 17:13–15)। आयत 17, के साथ 3:10 पौलुस और उसके सहकर्मियों और थिस्सलुनीके के मसीहियों के बीच एक अत्यधिक मजबूत मसीही बंधन की ओर संकेत करता है।

आयत 18. पौलुस और उसके सहकर्मी थिस्सलुनीके में **एक बार नहीं वरन् दो बार** आना चाहते थे परन्तु, **शैतान** अनाज्ञाकारी यहूदियों का प्रयोग

करते हुए उनके जीवन में भय उत्पन्न कर उन्हें वापस आने से **रोके रहा**। हम शैतान का दूसरों पर प्रभाव की तुलना प्रेरितों 5:3 और 2 कुरिन्थियों 2:11 से कर सकते हैं।

यूनानी में स्पष्ट कहता है कि शैतान ने उन्हें "एक बार वरन् दो बार" रोके रहा। यूनानी क्रिया शब्द ἐνέκοψεν (*एनेकोप्सेन*) का अनुवाद "रोके रहा" किया गया है जिसका प्रयोग मार्ग में बड़ा दरार, रास्ता पार करना कठिन बनाना, का वर्णन करने के लिये किया गया। इसीलिए पौलुस ने थिस्सलुनीके में उनके पहुँचने से रोकने के लिये शैतान पर आरोप लगाया। "यह बाधा बीमारी, कुरिन्थुस में यहूदियों का विरोध" या इसी के समान बातें हो सकती हैं।[24]

आयतें 19, 20. शब्द भला (तो फिर) बताता है कि क्यों पौलुस थिस्सलुनीकियों से मिलने के लिये बड़ा उत्साहित हुआ चाहता था—क्योंकि वे उसकी आशा और आनन्द थे। वास्तव में, उसने सुनिश्चित किया कि **हमारे प्रभु यीशु के सम्मुख उसके आने के समय** (अपनी महिमा के साथ द्वितीय आगमन; 4:15; 5:1–3), वे उसकी **बड़ाई का मुकुट** होंगे। "बड़ाई" यूनानी शब्द καύχησις (*कौचेसिस*) से लिया गया है। डेविड जे. विलियम्स ने लिखा,

> इस शब्द का अर्थ कभी-कभी "घमण्ड करना" (अन्य उदाहरण रोमियों 3:27; 2 कुरिन्थियों 11:10, 17) हो सकता है, परन्तु, इस सन्दर्भ में सबसे उत्तम अनुवाद "बड़ाई" किया गया है। पौलुस खेलकूद के रूपक को बनाए रखता है और स्वयं को एक खिलाड़ी के रूप में देखता है, अपनी जीत में सर्वश्रेष्ठ के सिंहासन के सामने महिमा पाने का घमण्ड कर रहा है।[25]

पौलुस ने आगे कहा, **हमारी बड़ाई तुम ही हो।** "बड़ाई/महिमा" का यूनानी शब्द δόξα (*डोक्सा*) है, "एक ऐसी प्रशंसा 'जिस पर मनुष्य गर्व करता है' जैसा कि 1 कुरिन्थियों 11:7 में, जहाँ पर 'एक स्त्री पुरुष की महिमा (δόξα) है।'"[26]

पौलुस थिस्सलुनीकियों के कारण जिसने विश्वासपूर्ण जीवन जीया "महिमा" (द्वितीय आगमन पर) पाएगा। वह उनकी ओर इशारा करेगा कि वे उसके अपने जीवन का एक अच्छा फल बना। इसका तात्पर्य है, कि वे उसकी "आशा" थे। और अधिक गहरे अर्थ में, निःसंदेह, मसीह हमारी आशा है (1 तीमुथियुस 1:1); परन्तु, वे लोग जो हमारे द्वारा मसीह में आ चुके हैं वे भी हमारी आशा हैं, जो गवाह का एक रूप बन चुके हैं कि हमने अपने गुणों का प्रयोग किया (मत्ती 25:14–28)। उसे यह जानकर बड़ा "आनन्द" हुआ कि उसने उन्हें अपने परमेश्वर में मेल-मिलाप कराने की एक भूमिका निभाई और बहुतायत का जीवन पाने में उनकी सहायता की (3 यूहन्ना 3, 4)।

भौतिक/सांसारिक वस्तुएं इस प्रकार का आनन्द नहीं दे सकती हैं, यह ज्ञान मसीह के लौटने पर जब हम उसके सामने खड़े होंगे तब दिया जाएगा। मसीहियों को सावधान रहना चाहिए कि इस आनन्द को पाने के लिये कोई भूल न हो जाए। अन्त में, पौलुस ने उन्हें अपना "मुकुट" कहा, जिस प्रकार अन्त के समय जब यह तय किया जाएगा कि वे अन्त तक धीरज धरे रहे, वे उसकी सेवकाई के मुकुट होंगे (1 कुरिन्थियों 3:13–15; फिलिप्पियों 4:1; 2 तीमुथियुस 4:6–8 भी देखें)।

अनुप्रयोग

अध्याय 2 में, पौलुस ने स्वयं का बचाव एक विश्वासयोग्य प्रचारक होने के रूप में करना चाहा। थिस्सलुनीके में उसके बारे में कुछ आलोचना की जा रही थी, क्योंकि कुछ लोगों ने उसके बहुत जल्दी से चले जाने के कारण को गलत ढंग से प्रस्तुत किया था। वे यहूदी हो सकते थे, जो थिस्सलुनीकियों के विरुद्ध सताव के मुख्य स्रोत थे, जो कहते थे पौलुस कपटी, डरपोक था और नई कलीसिया की सहायता के लिये वापस नहीं आएगा।

परन्तु, उसके इस प्रकार की आलोचना का सामना करने के विषय में दोनों पत्रियों में कोई विवरण नहीं मिलता। हो सकता कि आगे की अनुच्छेद में हो, पौलुस सचमुच में अपने कार्य का बचाव नहीं कर रहा था, परन्तु अपनी सेवकाई की सच्चाई और उस समय के झूठे प्रचारकों के छलपूर्ण प्रयास के बीच के अन्तर को स्पष्ट करने के लिये उसका वर्णन कर रहा था।

उसने थिस्सलुनीके की कलीसिया को जो कुछ उसने कहा था उसकी सुनिशिचित्ता के लिये प्रयोग किया। वे ही उसके गवाह ठहरेंगे। वे जानते थे कि उनके बीच उसका चाल चलन किस प्रकार का था।

चर्चा जिसमें वह सम्मिलित था वह सच्चे प्रचार की कला या आदत का एक सूझ-बूझ पूर्ण चित्रण था। प्रत्येक सुसमाचार प्रचारक को बार-बार और ध्यान से पवित्र शास्त्र के इस भाग का अध्ययन करना चाहिए।

एक प्रचारक आया (2:1, 2)

इस अध्याय की पहली दो आयतें हमें वापस प्रेरितों 16 और 17 में ले जाती हैं। अध्याय 16 में हम फिलिप्पी में कलीसिया का आरम्भ देखते हैं, और अध्याय 17 में हम थिस्सलुनीके की कलीसिया का आरम्भ देखते हैं, जो फिलिप्पी से लगभग साठ मील दूर था।

फिलिप्पी में पौलुस ने जो सताव सहा, वह उसे थिस्सलुनीके आने और वहाँ के लोगों को सुसमाचार प्रचार करने से रोक नहीं पाया। अपने प्रचार में

वह दृढ़ था और दूसरों के प्रति अपने उद्देश्यों और कार्यों से सच्चाई के परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहता था।

पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को स्मरण कराया कि उसे बंदी बनाया गया, पीटा गया, बंदीगृह में डाला गया, और अपमानित किया गया; परन्तु इनमें से कोई भी कठिनाई मुझे थिस्सलुनीके आने से रोक नहीं पाई। वह सुसमाचार के साथ उनके पास आया, जिसे वे सुन और मन में बिठा चुके थे।

ये दोनों आयतें प्रचारक के प्रकार के बारे में वर्णन करते हैं जो कठिन परिस्थितियों में खड़े होने के लिये चाहिए। कौन विपरीत परिस्थितियों में सुसमाचार को लेकर जाएगा?

उत्साह रखने वाला पुरुष। उसे दृढ़ता से विश्वास करने की आवश्यकता होगी कि दूसरों तक सुसमाचार का प्रचार किया जाना चाहिए। क्यों पौलुस मसीह इस संसार में आया था का प्रचार करने एक स्थान से दूसरे स्थान जाया करता था? इसका केवल एक ही उत्तर है। उसे अपने अनुभव से यह प्रेरणा मिली थी कि मसीह का सुसमाचार प्रचार किया जाना चाहिए।

सिद्धांतों पर चलने वाला पुरुष। उसे सुसमाचार के लिये लोगों की जरूरत का ज्ञान होना चाहिए ताकि वह दुःख उठाने के लिये तैयार हो जिससे वे उसे सुन सकें। जब फिलिप्पी में पौलुस का निरादर किया गया, तब वह आसानी से हिम्मत हारकर कभी भी सुसमाचार का प्रचार नहीं कर पाया होता। परन्तु, फिलिप्पी छोड़कर वह थिस्सलुनीके आ गया, यह जानते हुए भी कि ठीक उसी प्रकार का व्यवहार वहाँ भी उसका प्रतीक्षा कर रहा होगा एक पुरानी कहावत है "परमेश्वर ने शांति की यात्रा का वायदा नहीं किया; उसने केवल कुशल क्षेम से पहुँचने का वायदा किया है।" पौलुस जानता था कि प्रचार कार्य कभी-कभी व्यक्तिगत दुःख ला सकता है, परन्तु वह उसका मूल्य जानता था।

धीरज धरने वाला पुरुष। सहनशीलता जरूरी है। पौलुस के पास दृढ़ निश्चय का गुण था। सताव, लज्जा, निंदा और मारा कूटा जाना उसका कुछ भी बिगड़ नहीं सकते थे।

आश्चर्य की बात नहीं है, कि परमेश्वर ने पौलुस को सफलता दी! स्वर्गीय दृष्टिकोण से, एक प्रचारक बन के दिखाना केवल शिक्षा प्राप्त करने, लोगों के बीच बोलने की कला जानने और वचन का ज्ञान होने से कहीं बढ़कर है। ये सभी गुण जरुरी है, परन्तु, उसे सताव के दर्द के साथ स्थिर खड़े रहने के योग्य भी होना जरुरी है। EC

सेवक शिक्षक (2:1–12)

इस पत्री में अध्याय 2 का पहला आधा हिस्सा, पौलुस, सीलास और तीमुथियुस के भेजे जाने पर केन्द्रित है। पौलुस थिस्सलुनीकियों को स्मरण

कराने के लिए उत्सुक था कि जब वे एक साथ रहते थे और जो रिश्ता उनके बीच में बना उससे क्या सीखा जा सकता है। शिक्षकों के गुण को नकारात्मक और उसके बाद सकारात्मक रूप से वर्णन किया गया, ताकि वे युवा मसीही सीख पाए कि यह हरेक मसीह का काम है कि वे नमूना बने और सुसमाचार का प्रचार भी करे।

2:1–12 में, ऐसा प्रतीत होता है मानो पौलुस घमण्ड कर रहा था; परन्तु एक परीक्षण से पता चलेगा कि इस भाग का उद्देश्य रिश्तों, व्यवहारों और उद्देश्यों को परखना था। क्यों? वह इन युवा मसीहियों को ऊपर उठाने के लिये प्रोत्साहन और प्रेरणा देना चाहता था। ये आयतें हमें हमारे अपने उद्देश्यों, व्यवहारों और रिश्तों को परखने और उन्हें सुधारने में भी सहायता करते हैं।

परमेश्वर की सेवा करना हमारा उद्देश्य है (2:1–3)। क्या है जो दूसरों से मेलमिलाप को प्रभावशाली बनाता है? जब वे प्रचारक पहली बार थिस्सलुनीके में आये, तब कठिन परिस्थितियों में उन्होंने ऐसा ही किया; परन्तु परिणामस्वरूप उनका आना एक बड़ी आशीष को दिखाता है। उनका आना "व्यर्थ में" या "बिना उद्देश्य के" नहीं था। आयत 1 हमें उत्साहित करती है कि नई जगह को एक बड़ा अवसर मानकर "सबके साथ भलाई करें, विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ" (गलातियों 6:10)। यदि हम इसकी शुरुआत सकारात्मक दृष्टिकोण से करें, तो हम एक मुस्कराहट, आभार प्रकट करने और सहायता की भावना के साथ सदा के लिये प्रभाव डाल सकते हैं। हमारा आना कभी "व्यर्थ" नहीं होगा यदि परमेश्वर की सेवा के लिये—हम हमारे उद्देश्य को जानते हैं, परिस्थिति चाहे जो भी हो।

हम हमेशा बहुत से अवसरों को जाने देने के कारणों को पाते हैं। अकसर असफलता का डर या विरोध का डर हम जो कर सकते हैं उसे करने से रोकता है। आयत 2, आयत 1 की परिस्थितियों का विवरण देती है। फिलिप्पी में शिक्षकों ने "दुःख उठाया" और उनके साथ "बुरा व्यवहार किया गया।" प्रेरितों 16:19–23 स्पष्ट बताता है कि, उन्हें बन्दी बनाया गया, खींचकर ले जाया गया, मारा पीटा गया और बन्दीगृह में डाला गया और कोठरियों में रखा गया।

आज यदि इनमें से किसी एक तरीके से भी हमारे साथ बुरा व्यवहार किया जाए तो हम अधिक सहानुभूति, कुछ क्षतिपूर्ति और कम से कम एक सप्ताह विश्राम करने की छुट्टी और पुनः स्वस्थ होने की अपेक्षा करेंगे। हम यह भी समझ सकते हैं कि इन परिस्थितियों में लोग छोड़कर जा भी सकते हैं।

वे प्रचारक फिलिप्पी से अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया होकर थिस्सलुनीके में आए, और वहाँ आराधनालय में मसीह का प्रचार आरंभ किया (प्रेरितों 17:1–3)। जिसके परिणाम में अधिक विरोध हुए—"विरोध होते रहे"—परन्तु वे प्रचार करते रहे! रूकावट उत्पन्न करने वाले कुछ विरोधियों के

साथ सामना करने से उनकी समस्याएँ बहुत बढ़ गई। "बुरा व्यवहार किया गया" और "अधिक विरोध" जैसे शब्दों के अनुवाद निरादर, संघर्ष, क्लेश और निराशा को लेकर आते हैं! कुछ लोग जो मसीहियों को थिस्सलुनीके में सता रहे थे वे उन्हें बुरी तरह हानि पहुँचाने की सोच चुके थे इसलिये वे अपने शिक्षकों के पीछे साठ मील दूर बिरिया में हलचल मचाने आ पहुँचे (देखें प्रेरितों 17:13)।

कठिन परिस्थितियों में हम निरुत्साहित हो सकते हैं। हम छोड़ देना चाहते हैं। परमेश्वर चाहता है कि हम इन चुनौतियों को अलग से मिले हुए अवसर के समान देखें कि वैसा जीयें जैसा परमेश्वर हमसे चाहता है। परमेश्वर को आदर देने, अच्छा उदाहरण बनने और दूसरों को जो इसी रीति से दुःख उठा रहे हैं उन्हें प्रोत्साहित करने के ये अतिरिक्त अवसर हैं।

गलत इरादों के साथ सही काम करना सम्भव है, परन्तु परमेश्वर सम्पूर्ण गतिविधियों को देखता है। यदि हमारा मन गलत है, तब हमारे काम छल से भरे हुए हैं। हमारे लिये भला होगा कि हम हमारे इरादों को परखें और लोगों को अपनी भली इच्छा के बारे में बताएँ। ये प्रचारक घोषणा कर रहे थे कि उनकी इच्छाएँ विश्वासयोग्य और स्पष्ट थी (2:3)। वे अच्छे आचरण का मूल्य जानते थे क्योंकि वे हानि को देख चुके थे जो "भ्रम," "अशुद्धता" और "छल" के द्वारा एक शिक्षक के जीवन में की जा सकती है। इसके विपरीत, वे भक्तिपूर्ण जीवन के बड़े महत्व को भी जानते थे।

परमेश्वर को हमारे कार्यों का ध्यान है, परन्तु पहले उसे हमारे मन—इसके व्यवहार, इरादों और इच्छाओं का ध्यान है। प्राचीन कलीसिया में सुसमाचार के प्रचार में कुछ लोगों के इरादे गलत थे (फिलिप्पियों 1:15–17)। पौलुस सच्ची भावना से कहता है कि जो उसके सन्देश को सुनते थे उनसे आदर और पैसे लेने का उसे कोई लोभ नहीं था (2:6, 9)।

दूसरे लोग हमारे इरादों को नहीं जानते, परन्तु परमेश्वर जानता है। इसलिये, विश्वासी होने के कारण हमारी उन्नति को अवलोकन करने का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा अपने इरादों को जाँचना है। दूसरे हमें बहुत सरलता या कठोरता से परख सकते हैं, परन्तु परमेश्वर हमेशा सही सही जाँचता है।

जिस रीति से हम जीते हैं उसके कारणों को परमेश्वर कैसे देखता है? हमारे उद्देश्यों में परमेश्वर की परख को रखना बहुत कठिन है क्योंकि मनुष्य का परखना उसमें हस्तक्षेप करते हैं। यदि कोई भी हमारी आलोचना नहीं करता, तो हम मानते हैं कि हम अच्छा काम कर रहें हैं। यदि बहुत से लोग हमारी आलोचना करते हैं तो हम झट से बीमार पड़ जाते हैं। कुछ लोगों के लिये आलोचना असफलता का पर्याय होता है। मसीही होने के कारण हमें स्मरण रखना चाहिए कि परमेश्वर हमें और हमारी इच्छाओं को जानता है।

मसीहियों की चिंता करना हमारा कर्तव्य है (2:4–11)। थिस्सलुनीके में जो शिक्षक आये थे उनके चाल चलन के गवाह परमेश्वर और थिस्सलुनीकियों की कलीसिया थे। परमेश्वर ने उन को सुसमाचार सौंप कर अपनी स्वीकृति जताई थी (2:4)। थिस्सलुनीकियों की कलीसिया यह भेद जान चुकी थी कि ये उपदेशक किस प्रकार के लोग थे जब आरम्भिक दिनों में वे थिस्सलुनीके आते थे। ये आयतें चिंता करने वाले शिक्षक या कलीसिया के अगुवे के बारे में क्या कहती है?

पहला, चिंता करना चापलूसी करना बिल्कुल नहीं होता है (आयतें 5, 6)। पौलुस, सीलास और तीमुथियुस ने चापलूसी करके अपने सुनने वालों से व्यक्तिगत प्रशंसा पाने के लिये प्रचार नहीं किया, और न ही उन्होंने लालच को तृप्त करने के लिये पैसा लेने का प्रयास किया। पौलुस नहीं चाहता था कि उसके सुनने वाले मात्र सन्देश की प्रस्तुति से, परन्तु सिर्फ सन्देश के द्वारा ही प्रभावित किए जाएँ। विशेषज्ञ के विचार, बोलने की एक अच्छी कला और एक प्रभावकारी शब्दावली का प्रयोग झूठ और सच दोनों को बढ़ावा देने के लिये किया जा सकता है। पौलुस सुनिश्चित करना चाहता था कि यह सिर्फ परमेश्वर के सन्देश की सरलता और सिद्धता है जो सुनने वालों में प्रभाव डालती है।

पौलुस और उसके सहकर्मियों ने थिस्सलुनीकियों के सामने सच्चाई को एक साधारण तरीके से प्रस्तुत किया था, जैसे सुनने वालों के मन में बोलने वालों के बारे में कोई झूठा प्रभाव न डालना—उनकी प्रशंसा का कोई कारण न रखना परन्तु सन्देश पर ध्यान देना। हम लोगों से चाहते हैं कि वे न तो "कितना बड़ा प्रचारक है!" और न ही "कितना अच्छा प्रस्तुतिकरण है!" कहें परन्तु "परमेश्वर की ओर से कितना अच्छा सन्देश है!" कहें। हमारा उद्देश्य लोगों के लिये है जो यीशु से प्रभावित हों। हमें लोगों को उद्धारकर्ता यीशु को जवाब देने को प्रोत्साहित करना चाहिए, न कि हमें!

दूसरा, चिंता कोमलता को प्रकट करती है (आयतें 7, 8)। दूसरों के साथ कार्य करते हुए मसीहियों को किस प्रकार होना चाहिए? पौलुस, सीलास और तीमुथियुस एक छोटे बच्चे की माता के समान थे। कितना अच्छा पाठ सीखा जा सकता है! एक छोटे बच्चे के लिये हर समय सोचना, चिंता करना और ध्यान रखना। एक माता या सेविका एक असहाय बच्चे की लगातार देखभाल करती है जो बोल, चल या अपने हाथों से खा नहीं सकता। एक माता उसके हरेक जरूरतों को उदारता और कोमलता के साथ पूर्ति करने की भावना रखती है ताकि उसकी जरूरतों की पूर्ति हो और उसके कोमल शरीर के किसी भी छोटे से छोटे अंग को कोई हानि न पहुँचने पाए। परमेश्वर का दिया जीवन उसके हाथों में है! क्या ये एक प्रचारक के भी होने समान है?

क्या हमारा प्रचारक प्रशिक्षण का उद्देश्य शिक्षकों को प्रशिक्षण देना है, जो

"साँपों के समान बुद्धिमान और कबूतरों के समान भोले" होते हैं (मत्ती 10:16)? मैं एक प्रचारक प्रशिक्षण स्कूल में कार्यरत हूँ, और एक बार एक प्रचारक ने कुछ छात्रों को "कोमल" होने की प्रशंसा करते हुए इंगित किया कि प्रचारकों के लिये यह एक विशेष जरूरत है (2 तीमुथियुस 2:25)। उस समय तक मैंने गम्भीरता से इसके बारे में नहीं सोचा था; परन्तु यह प्रचारकों, शिक्षकों, प्राचीनों और सहायकों के प्रशिक्षण के उद्देश्यों में से एक होना चाहिए। जब हम बल, अधिकार और प्रबलता से प्रभावित होकर परीक्षा में पड़ जाते हैं, तब यीशु के कार्यों के वर्णन का स्मरण करें: "वह कुचले हुए सरकण्डे को न तोड़ेगा, और धुआँ देती हुई बत्ती को न बुझाएगा" (मत्ती 12:20)।

परिवार के बालकों के समान थिस्सलुनीकियों से व्यवहार करते हुए, पौलुस और उसके सहकर्मियों ने "माता-पिता" का अपने नए जन्मे "बच्चों" के साथ मजबूत बंधन को देखा। इसका वर्णन इस प्रकार किया गया है "हम तुम्हारी लालसा करते हैं ..." क्योंकि वे उनके "प्रिय" हो गए थे (2:8)।

नए मसीहियों के वातावरण का हिस्सा बनने के लिये परमेश्वर घरेलू मित्रता का व्यवहार चाहता था। परमेश्वर उनसे चाहता था कि परिवार का एक हिस्सा, भाई बन्धु बने। यह अनुभव उनके सांसारिक परिवारों और उनके समुदाय के दूसरे सदस्यों से अलगाव और सताव का सामना करने में उनकी सहायता करेगा जब उन्होंने सच्चे परमेश्वर की सेवा करने के लिये मूर्तिपूजा को त्याग दिया। वे परमेश्वर के परिवार का हिस्सा बनकर आनन्द और सुरक्षा का अनुभव करेंगे।

तीसरा, चिंता से कार्य होता है (आयतें 9–11)। हर किसी के समान, प्रचारक और शिक्षक भी आलस्य में पड़ सकते हैं। आयत 9 एक प्रभावित करने वाली बात है कि सुसमाचार प्रचार के लिये, जो एक कठिन कार्य है पराए शहर में जाना—और इसे कर दिखाना! यहाँ पर यही महत्वपूर्ण बात थी। क्योंकि ये प्रचारक जब वे सिखाते थे तब स्वयं की आर्थिक सहायता भी करते थे, इसलिये वास्तव में वे दो काम करते थे।

पौलुस यह समझ गया कि परमेश्वर ने सुसमाचार प्रचार के लिये प्रचारकों को आर्थिक सहायता की स्वीकृति दे दी है (1 कुरिन्थियों 9:6, 7; फिलिप्पियों 4:15–17)। उसी समय, प्रचारकों ने कलीसिया को अपनी सहायता के लिये माँग नहीं की। वे अपनी सहायता के लिये कलीसिया पर भार डालकर उनकी दूसरी समस्याओं को बढ़ाना नहीं चाहते थे। यह एक तरीका है जिसमें इन कार्यकर्ताओं ने मसीही उत्साह को बढ़ाने के लाभ के लिये अपने जीवन को दे दिया।

स्पष्ट है कि, मसीहियों को स्वीकारना चाहिए कि शिक्षकों का अधिकार है कि उनकी सहायता की जाए। शिक्षकों को भी सीखना चाहिए कि कठिन

परिश्रमी बने, सुसमाचार के प्रचार के लिये सहायता मिले या न मिले। काम के प्रति आलस या लापरवाही के लिये सीखने में कोई स्थान नहीं है।

बहुत से कामों में प्रशिक्षण, कला और योग्यता की आवश्यकता होती है। कितनी बार आपने भरोसा और परिश्रम को किसी काम के लिये योग्यता के रूप में देखा? निश्चित ही ये वे योग्यताएँ हैं जो जीवन में किसी भी प्रकार की ईश्वरीय सेवा को अधिक प्रभावशाली बना देती है। कुछ कलीसियाओं ने शिक्षा, बातचीत करने की कला और व्यापार में अपने कर्मियों की सफलता को ढूंढा और बाइबल के उदाहरणों को पूरी रीति से अनदेखा किया 2:10 में: "... तुम विश्वासियों के बीच में हमारा व्यवहार कैसा *पवित्र* और *धार्मिक* और *निर्दोष* रहा।" (वर्णन दिया गया है।) शब्दों का यह त्रिसमूह एक समान हैं कि हमारे पास उनके बीच में अन्तर, समस्या उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार के शब्दों के मेल का अभिप्राय प्रायः तीन अलग-अलग विचार नहीं होता, परन्तु ये एक दूसरे को अधिक शक्तिशाली बनाते हैं और एक महत्वपूर्ण गुण का वर्णन करते हैं।

यह महत्वपूर्ण बात है कि शिक्षक अपने व्यवहार का स्तर ऊँचा बनाए रखें। कोई भी कार्य जिसे उन्होंने किया वह परमेश्वर के स्तर के अनुसार पूरा किया गया। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि उन्होंने कभी दण्ड मिलने वाली गलती नहीं की और कभी पाप नहीं किया। यह इस ओर संकेत करता है कि उन्होंने परमेश्वर के स्तर को अपने कार्यों में लागू किया जिससे कि किसी भी परिस्थिति में, अच्छी हो या बुरी परमेश्वर की इच्छा में परमेश्वर के उद्देश्य की पूर्ति के लिये किया गया। जब प्रचारक चले गए, थिस्सलुनीके के लोग नहीं कह सकते थे कि, "ऐसी कोई समस्या है जिसको कभी नहीं कहा गया; ऐसा कोई पाप है जिसके लिये कभी पश्चाताप न किया गया।" उनके व्यवहार या चरित्र पर कोई झूठा दोष नहीं लगाया जा सकता था।

आयत 11 में इन शिक्षकों के व्यवहार से सम्बन्धित एक और त्रिसमूह शब्दों का प्रयोग हुआ है: "... तुम जानते हो कि जैसा पिता अपने बालकों के साथ व्यवहार करता है, वैसे ही हम भी तुम में से हर एक को *उपदेश करते,* और *शान्ति देते*, और *समझाते थे*।" (वर्णन दिया गया है।) एक पिता अपने बच्चों का पालन पोषण करने के लिये शिक्षा, समझाने-बुझाने और चेतावनी सभी जरुरी बातों का प्रयोग करता है और साथ ही निराशा और उन्हें रिस दिलाने वाली बातों का प्रयोग नहीं करता (इफिसियों 6:4)। जिस प्रकार बच्चों का सही पालन पोषण में माता पिता अपना जीवन निछावर कर देते हैं, उसी प्रकार सही उपदेश में उपदेशक का अपना जीवन देना एक उदाहरण होना चाहिए।

इसी प्रकार, शिक्षकों को छात्रों के विकास के लिये उत्साहित करने वाले शिक्षा के साधनों का प्रयोग करना चाहिए। सच में, हर मसीही को एक दूसरे को त्याग करना और धीरज रखना सिखाना चाहिए: "इस कारण एक दूसरे को

शान्ति दो और एक दूसरे की उन्नति ..." (5:11)। आइए हम परिश्रमी, धीरज, निर्दोष सेवक बने जिन्हें परमेश्वर अपने लोगों के कल्याण के लिये चाहता है! हमें चिंता करने वाले माता पिता के समान व्यवहार करना चाहिए, जैसे प्रेमी पिता और देखभाल करने वाली माता!

परमेश्वर की महिमा करना हमारा उद्देश्य है (2:12)। मसीही जीवन मसीह को प्रगट करना चाहिए। नया नियम प्रायः "योग्य" होने के विचार का प्रयोग करता है। 2:12 में मसीहियों को विनती की गई है कि, "तुम्हारा चाल चलन परमेश्वर के योग्य हो, जो तुम्हें अपने ... ।" इसका अभिप्राय क्या है? थिस्सलुनीकियों की कलीसिया को उत्साहित किया गया कि वे बताएँ कि परमेश्वर ने उनके जीवन को प्रभावित किया। विश्वासियों को इस प्रकार व्यवहार रखना है जो लोगो को दिखाए कि, परमेश्वर क्या है और अपने लोगों से कैसे जीने की आशा करता है।

यह सीखना कि परमेश्वर कैसा है और वह क्या चाहता है, परिपक्वता का एक भाग है। नए विश्वासियों से परमेश्वर के बारे में और उनके जीवन के लिये उसकी इच्छा को जानने की आशा नहीं की जाती, परन्तु उनसे आशा की जाती है कि "परखो कि प्रभु को क्या भाता है" (इफिसियों 5:10)। इस सिद्धांत को सीखना और लागू करना मसीही उन्नति का आधार है।

आयत 12 नहीं कहती कि हम परमेश्वर के राज्य और महिमा में सम्मिलित होने के योग्य हैं। यह ऐसा दान है जिसे हम कभी कमा नहीं सकते। यह सीख है, कि हमारी इच्छा परमेश्वर के भावता जीवन जीना हो, जो कि एक योग्य इच्छा है। हम ऐसे परमेश्वर के लिए आभारी हो सकते हैं जो दयालु है, और हम में से प्रत्येक को प्रसन्नतापूर्वक अपने राज्य और अपनी महिमा में सहभागी बनाता है! वह हमसे चाहता है कि हमारा चाल चलन ऐसा हो जिसके द्वारा हम उसके गुणों को प्रकट करें। क्या लोग हममें परमेश्वर को देखते हैं?

उपसंहार। इससे कितना बड़ा अन्तर आ जाएगा यदि हर शिक्षक इन आयतों से शिक्षा प्राप्त ले! आइए हम हमारे अगुवे, यीशु के पीछे चलने का निश्चय करें और जो यीशु के पीछे चलते थे उन लोगों के उदाहरणों के पीछे चलने का निश्चय करें। आइए हम अपने शिक्षकों और अगुवों को इस बात के लिए प्रोत्साहित करने का प्रण लें कि वे साथी मसीहियों को अपने जीवनों और साथ ही अपनी शिक्षाओं के द्वारा सहायता करें तथा यह संकल्प लें कि वे ऐसे होंगे जिनके जीवन से दूसरों को मसीह का अनुसरण करने में सहायता हो। TP

पौलुस साहसी था (2:2, 3)

पौलुस एक आदर्श मसीही सन्देशवाहक था। वह चाहता था कि "सब बातों

में वही (मसीह) प्रधान ठहरे" (कुलुस्सियों 1:18)। उसने स्वयं को पापी मनुष्य होने का अंगीकार किया (1 तीमुथियुस 1:15)। 1 थिस्सलुनीकियों अध्याय 2 वर्णन करता है कि पौलुस किस प्रकार का सन्देश वाहक था।

समय-समय पर पौलुस को एक साहसी सन्देशवाहक होना था। यद्यपि उसके पास पीछे हटने का कारण था क्योंकि फिलिप्पी में उसके साथ बुरा व्यवहार किया गया (देखें आयत 2; प्रेरितों 16:16–24), अपनी रक्षा के लिये उसने परमेश्वर पर भरोसा किया। वह दूसरे प्रेरितों के समान ही था, जिन्होंने कहा, "मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही हमारा कर्तव्य है" (प्रेरितों 5:29)।

उसका सन्देश अति उत्तम था। वह "परमेश्वर का सुसमाचार" था (आयत 2), स्वर्ग से परमेश्वर का सुसमाचार था। वह उद्धार, मृत्यु के चारों ओर केन्द्रित, गाड़े जाने और यीशु के पुनरुत्थान का सुसमाचार था (देखें 1 कुरिन्थियों 15)। कुछ लोगों ने झूठे सुसमाचार का प्रचार किया, परन्तु पौलुस ने केवल सच्चे सन्देश का प्रचार किया, सुसमाचार जिसमें परमेश्वर के उद्धार का सामर्थ्य पाया जाता था (रोमियों 1:16)।

उसका चाल चलन शुद्ध था। उसने लिखा, "क्योंकि हमारा उपदेश न भ्रम से है और न अशुद्धता से ..." (आयत 3)। पौलुस की जीवनशैली ने उसके सन्देश को विश्वसनीयता दी। वह "अशुद्धता" का दोषी नहीं था जिसे सम्भवतः यौन अशुद्धता से जोड़ा जाता था। पराए लोगों की धार्मिक प्रथाएँ उनके मंदिरों पर अवैध यौन गतिविधियों के द्वारा चित्रित किया जाता था, परन्तु पौलुस ने आत्मिक बातों का वर्णन किया, जो कि अपनी देह को अपने नियंत्रण में रखना है।

उसका इरादा अच्छा था। उसने लिखा कि "क्योंकि हमारा उपदेश न ... और न छल के साथ है" (आयत 3)। सुसमाचार प्रचार के लिये पौलुस का इरादा शुद्ध था। दूसरे लोग "चापलूसी की बातें" कर विश्वास को लेकर ठग सकते थे (आयत 5), परन्तु पौलुस ने थिस्सलुनीकियों की कलीसिया को स्मरण कराया कि, उसे उनसे अपने व्यक्तिगत लाभ की कोई इच्छा नहीं थी। उसका इरादा शुद्ध और सही था—उन्हें देखना कि वे परमेश्वर के द्वारा बचाए जाएँ।

आज हमारा साहस कहाँ गया? मसीह के सुसमाचार को बाँटने और प्रचार करने के लिये हममें खतरे उठाने की इच्छा होनी चाहिए। जब लोगों को हम मसीह के बारे में सिखाते हैं, हमारा सन्देश सच, हमारा चाल चलन शुद्ध और हमारा इरादा सच्चा होना चाहिए। EE

विश्वासयोग्य प्रचारक (2:2–6)

हर सच्चा प्रचारक विश्वासयोग्य बनना चाहता है। वह ऐसा प्रचारक बनने

की इच्छा रखता है जिसे परमेश्वर की प्रशंसा प्राप्त हो।

विश्वासयोग्य प्रचार के प्रमुख तत्व क्या हैं?

विरोध के बीच साहसी बने रहना (2:2)। पौलुस दण्ड भोगने के बाद बन्दीगृह से बाहर आया, परन्तु न तो भूख, प्यास और न ही कठिन परिश्रम उसे परमेश्वर के वचन का प्रचार करने से रोक पाए।

सुसमाचार पहुँचाने में सच्चा (2:3)। वह थिस्सलुनीकियों के पास भ्रम के साथ नहीं आया। उसने उन्हें सुसमाचार को दिया जो उसे सौंपा गया था।

परमेश्वर को प्रसन्न करने को समर्पित (2:4)। वह *केवल* अपने परमेश्वर की स्वीकृति चाहता था।

सिर्फ *विश्वासयोग्य* प्रचारक ही न्याय सिंहासन के सामने खड़ा हो सकता है। किसी भी मनुष्य ने बड़ी बुलाहट के लिये लालसा नहीं छोड़ी। EC

शुद्ध हृदय से (2:3–6)

एक अच्छे कार्य का मूल्य होता है चाहे उसकी शुरुआत बुरे इरादे के साथ क्यों न की गई हो। प्रचार लोगों के लिये आशीष ला सकता है, चाहे जो उसका प्रचार करता है गलत कारणों से उसे क्यों न करता हो। इसी कारण, सच्चा प्रचार जो दृढ़ता के साथ बढ़ता है वह परमेश्वर का सामर्थ्य होता है। प्रभु के द्वारा इसकी स्वीकृति दी जाएगी और मनुष्यों के लिये वह बड़ा आशीष का कारण ठहरेगा।

पौलुस ने सभी प्रचारकों प्रेरित करने के विषय में अपने को एक उदाहरण के रूप में रखा है। हरेक प्रचारक अपने आप से पूछे कि, "किस प्रकार का हृदय मेरे पास है?"

भ्रम से रहित हृदय। पौलुस को भ्रम में कोई रूचि नहीं थी। उसने सत्य को पाया और उन सभी को जो उसे सुनेंगे, उसका प्रचार करने निकल पड़ा। मसीही शहीदों ने अपना जीवन कुशलता से झूठ बोलने के लिये नहीं दिया।

अशुद्धि से शुद्ध हृदय। पौलुस दुष्टता के कामों से आगे नहीं बढ़ाया गया या अशुद्धता से उसके जीवन को चित्रित नहीं किया गया। उसके पास एक साफ सुथरा विवेक और शुद्ध मन था। उसने थिस्सलुनीकियों के भटके लोगों का उद्धार शुद्ध विवेक के साथ ढूँढा।

बुरे इरादों से स्वतंत्र हृदय। उसने कपटी मन से प्रचार नहीं किया, न ही वह छली, अनुचित रीति से या चतुराई से कार्य करने वाला प्रचारक था। वह निष्कपट और विश्वासयोग्य था।

उसने लोगों की सेवा उन्हें मसीह में लाने के द्वारा की, परन्तु परमेश्वर को प्रसन्न करने की उसकी इच्छा सबसे बड़ी थी। जब वह मसीही बना, तब उसने अपने यहूदी मित्रों को खुश करने वाले सभी इच्छाओं का त्याग कर दिया।

उसका हृदय केवल परमेश्वर की स्वीकृति चाहता था। नए विश्वासियों से या किसी और से व्यक्तिगत आदर पाने की इच्छा उसके जीवन में प्रवेश नहीं कर पाई।

धन उसके मन को भटका नहीं पाया; लोभ या लालच उसे विवश नहीं कर पाया। अपने कार्य के अधिकांश भाग में वह एक व्यावसायिक मिशनरी या सेवक था, स्वयं की सहायता के लिये उसने अपने तम्बू-बनाने के गुणों का प्रयोग किया।

संसार कितना आशीषित हो जाएगा यदि सभी प्रचारक जैसा पौलुस था उसके समान प्रेरिताई में शुद्ध आचरण वाले बन जाएँ? ऐसे प्रचारकों का आदर क्यों जो कठिन समयों में असफल रहे? क्या यह विषय इरादों का है? EC

पौलुस कोमल हृदय व्यक्ति था (2:6–8)

आयतें 2 और 3 में, पौलुस स्वयं को साहसी बताता है। आयत 7अ में, उसने कहा, "हम ने भी तुम्हारे बीच में रहकर कोमलता दिखाई है।" वह अधिकारियों के प्रति साहसी और विश्वासियों के प्रति कोमल था। "कोमल" अर्थात् वह मनुष्य जिसके पास बिना झिझक के पहुँचा जा सकता है। वास्तव में, उसने थिस्सलुनीकियों की चिंता की, वैसे ही "जिस तरह माता अपने बालकों का पालन-पोषण करती है" (आयत 7ब)।

"*पौलुस का [अपने] अधिकार पर जोर*" (आयत 6)। क्योंकि वह एक प्रेरित था, उसके पास स्पष्ट शब्दों में कहने, कठोरता दिखाने और आर्थिक सहायता के लिये बोझ डालने के अधिकार थे। परन्तु, इस अधिकार के साथ उसने कलीसिया पर कोई माँग नहीं रखी।

पौलुस ने "उनके बीच कोमलता दिखाई" (आयत 7)। थिस्सलुनीके की कलीसिया शिशु और अनुभवहीन थी। इसलिये, पौलुस ने उनका पालन पोषण बच्चों के समान किया, जैसे कि "तुम्हारी लालसा ... प्रिय हो गए थे" (आयत 8)।

पौलुस उनके लिये समर्पित था (आयत 8)। उसने लिखा कि, "वैसे ही हम तुम्हारी लालसा करते हुए, न केवल परमेश्वर का सुसमाचार पर अपना अपना प्राण भी तुम्हें देने को तैयार थे ..." एक कोमल, प्रेमी स्वभाव का मनुष्य केवल शब्दों के द्वारा ही चिंता नहीं; परन्तु त्याग भी करता/करती है। जैसे एक माता अपने बच्चों का "पालन पोषण करती है," वैसे ही पौलुस ने उन्हें सुसमाचार (आत्मिक भोजन) दिया। शब्द "पालन पोषण" एक मजबूत भावनात्मक बंधन की ओर संकेत करता है। यदि आवश्यक होता तो वह अपना जीवन उनके लिये पहले ही दे चुका होता (देखें रोमियों 9:1–3)।

मसीही होने के रूप में हमें पौलुस का दूसरों के लिये कोमलता दिखाने का

उदाहरण का पालन करना और विशेषकर नए विश्वासियों के साथ करना चाहिए। हमें उन पर ध्यान देना और परमेश्वर के वचन से उन्हें तृप्त करना चाहिए। हमें उन्हें न केवल सुसमाचार से परन्तु अपने जीवन से भी सीखना चाहिए। EE

अपने प्रचार के अनुसार जीना (2:7–12)

एक प्रचारक का चाल चलन शोभनीय होनी चाहिए। वह सच्चाई का प्रचार करता है, पर यदि स्वयं सच्चाई में नहीं चलता तो, उसका सन्देश सुनकर भी सुना नहीं जाएगा। हम जो होते है वह हम जो कहते हैं उसे प्रभावित करता है।

पौलुस का उदाहरण सर्वश्रेष्ठ था। उनके सामने उसका जीवन उदाहरणों की एक उपजाऊ भूमि थी। वह कहेगा, "देखो तुम्हारे बीच मेरा चाल चलन कैसा था। क्या इससे पता नहीं चलता कि मैं तुम्हारी कितनी चिंता करता था और अपने व्यक्तिगत मनन के बारे में कितना गम्भीर था?" थिस्सलुनीकियों के लिये पौलुस का उदाहरण व्यक्त करता है कि, हमें अगुवाई कैसे करनी चाहिए।

दृढ़ संकल्प के साथ। उसने उनके बीच ऐसा कार्य किया जैसे एक माता अपने बच्चों की देखभाल और चिंता करती है। वह कोमल और स्नेही बना रहा और अपना समय उनके लिये दे दिया। एक "जन प्रचारक" होकर वह वहाँ केवल उपदेश देने के लिये नहीं था—परन्तु सुसमाचार को नमूना बनाना चाहता था और उसका प्रचार भी करना चाहता था।

लोगों के लिये अपना जीवन देना। वह थिस्सलुनीकियों को केवल अपना समय ही नहीं देना चाहता था। उनकी आत्मिक उन्नति में वह इस रीति से शामिल हो चुका था कि कह सकता था कि वह अपना जीवन भी उन्हें दे चुका था। अच्छे प्रचार में किसी के जीवन के साथ उसके शब्दों की भी जरूरत होती है।

उदाहरण के द्वारा अगुवाई। उसने एक तम्बू-बनाने वाले का काम किया ताकि वह उन पर आर्थिक बोझ न बन पाए । वे इस बात के गवाह थे कि उसने उनके बीच धार्मिकता का जीवन जिया है, और उसने किसी भी रीति से उनका इस्तेमाल या लाभ नहीं उठाया है।

पैतृक अनुशासन के साथ डाँट। जैसे एक पिता अपने बच्चों साथ व्यवहार करता है, पौलुस ने थिस्सलुनीकियों के साथ किया। जहाँ जरूरत होती वह उन्हें सही करता था, परन्तु वे जानते थे कि वह उनसे प्रेम करता था और अनुशासन उनकी उन्नति के लिये दिया जाता था।

पौलुस एक आदर्श प्रचारक था! उसका प्रचार सभी के लिये उत्तम बात होती थी। आप उसे सुनते हैं क्योंकि आप जानते हैं कि वह आपसे प्रेम करता है और उसका कोई कार्य छिपा नहीं है। EC

पौलुस अच्छा "व्यवहार करनेवाला" था (2:9–12)

एक चिंता करने वाले प्रेरित के समान, पौलुस ने थिस्सलुनीकियों के साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया। उसने लिखा कि, "तुम आप ही गवाह हो, और परमेश्वर भी गवाह है कि तुम विश्वासियों के बीच में हमारा व्यवहार कैसा पवित्र और धार्मिक और निर्दोष रहा" (आयत 10)। पैतृक छवि का फिर से प्रयोग करते हुए, पौलुस ने विश्वासियों के प्रति अपने आचरण को एक अच्छा पिता के समान होने का वर्णन किया (देखें आयत 11)। एक अच्छा पिता किस प्रकार का व्यवहार करता है?

अपने बच्चों की जरूरतों की पूर्ति के लिये वह परिश्रम करता है (आयत 9)। पौलुस के पास अधिकार थे कि उसे दिया जाए, परन्तु उसने अपनी आर्थिक जरूरतों की पूर्ति के लिये तम्बू-निर्माण का व्यवसाय किया, विश्वासियों पर बोझ नहीं डालना चाहता था, जो कि विश्वास में नए थे। उसने उन्हें आत्मिक भोजन खिलाया और उसके बदले में किसी भी वस्तु की आशा नहीं की। वह "परिश्रम," "कठिनाई," से होकर गया और थिस्सलुनीकियों के बीच रहने और उन्हें आत्मिक भोजन खिलाने के लिये "रात और दिन" काम किया करता था।

वह सही चाल में चलता है (आयत 10)। पौलुस ने वर्णन किया कि थिस्सलुनीकियों के बीच में उसका व्यवहार कैसा "पवित्र" और "धार्मिक" और "निर्दोष" रहा। एक पवित्र मनुष्य वह है जो धार्मिक होता है, और परमेश्वर का आदर करता है। थिस्सलुनीकियों की कलीसिया ने निःसंदेह पौलुस से प्रार्थना या आराधना करना उसे देखकर ही सीखा। एक पवित्र मनुष्य वह है जो धार्मिक होता है, परमेश्वर की आज्ञाओं को मानता है। थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के भाइयों ने पौलुस के वचन के प्रति आज्ञाकारिता से सीखा था कि किस प्रकार दूसरों के प्रति भले और उदार बने। एक निर्दोष मनुष्य पापरहित नहीं होता परन्तु वह होता है जो सही करने का प्रयास करता है और जब भी गलती करता है तो क्षमा माँगता है। थिस्सलुनीकियों ने देखा कि जब वह किसी भाई को कष्ट पहुँचाता तो क्षमा माँगता था।

उसके वचन सही हैं (आयतें 11, 12)। थिस्सलुनीकियों को पौलुस के पिता के समान "उपदेश करते," और "शान्ति देते" और समझाते रहने से लाभ हुआ। कुछ लोग कहते हैं कि हमें केवल अपने विश्वास पर बने रहना चाहिए इसकी चर्चा नहीं करनी चाहिए। परन्तु जिस प्रकार अच्छे पिता जब जरूरी होता है तब बोलना और उत्साहित करना चाहते हैं, वैसे ही विश्वासियों को भी अपने वचनों का प्रयोग कलीसिया की उन्नति के लिये करने की इच्छा रखनी चाहिए। हमें उत्साहित करना चाहिए जब हम इसकी जरूरत देखते हैं, अच्छे जीवन जीने के लिये दूसरों की सहायता करनी चाहिए । हमें टूटे मन वालों को ढाढस

देनी चाहिए। हमें समझाना चाहिए की परमेश्वर की भलाई का गवाह बने।

पौलुस ने व्यवहार का जो नमूना रखा उसका पालन हमें भी करना चाहिए। हम काम करें और कलीसिया की जरूरतों के लिये दें, अपनी भौतिक आशीषों के लिये परमेश्वर की सहायता लें। हमारा चाल चलन सही हो, पवित्र, धार्मिक और निर्दोष बने। हम दूसरों को विश्वासयोग्य जीवन जीने के लिये उपदेश करते," और "शान्ति देते" और समझाते रहने के समय सही शब्दों का प्रयोग करें। EE

कैसे सुनें (2:13)

थिस्सलुनीकियों के "अच्छे हृदय" को टुकड़ों में दर्शाया गया था कि उन्होंने परमेश्वर के वचन को कैसे ग्रहण किया था।

उन्होंने वचन को "परमेश्वर के वचन" के रूप में समझा (आयत 13अ)। जो संदेश उन्होंने सुना था वह पौलुस और उसके सहयोगियों जैसे मनुष्यों के द्वारा आया था (देखें रोमियों 10:14)। फिर भी, यह संदेश मनुष्य से उत्पन्न नहीं हुआ था। गलातियों 1:11, में पौलुस ने लिखा है, "जो सुसमाचार मैं ने सुनाया है, वह मनुष्य का सा नहीं।" बाद में उसी अध्याय में उसने यह भी लिखा है कि उसके हृदय परिवर्तन के बाद वह तुरंत यरूशलेम नहीं गया (आयत 17) और उसका संदेश यीशु मसीह के प्रकाशन से ही उसे मिला (आयत 12)। पौलुस का थिस्सलुनीकियों को दिया गया वही संदेश है जो उसने आसिया की कलीसियाओं को लिखा था। यह संदेश परमेश्वर की प्रेरणा से रचा था।

उन्होंने वचन को "परमेश्वर का वचन" समझकर ग्रहण किया था (आयत 13ब)। पौलुस ने तीमुथियुस को लिखा कि "हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है" (2 तीमुथियुस 3:16अ)। यहाँ प्रेरणा शब्द "श्वास लेने" की ओर संकेत करता है जो इस बात का सूचक है कि ये शब्द परमेश्वर के मुख के श्वास से निकला है। थिस्सलुनीकियों ने "संदेश प्राप्त किया" का तात्पर्य यह हुआ कि उन्होंने उसे अपने कानों से सुना और उन्होंने उसे "स्वीकार भी किया" का तात्पर्य यह हुआ कि वह संदेश उनके स्तर के होने के कारण उन्होंने उसका आलिंगन किया।

उस संदेश ने तब उनमें "कार्य किया" और उनके जीवन को बदल डाला। यह विचार उससे मिलता जुलता है जिसे पौलुस ने अन्यत्र लिखा। इफिसियों 3:20 में, उसने "वह सामर्थ्य जो हममें कार्य करता है" के बारे में लिखा है। फिलिप्पियों 2:12, 13 में, पौलुस ने लिखा, "डरते और कांपते हुए अपने-अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ। क्योंकि परमेश्वर ही है, जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है।" परमेश्वर ने उनके जीवन में अपने कार्य के द्वारा परिवर्तनकारी प्रभाव डाला

है जिसने उन्हें परमेश्वर की महिमा के स्वरूप में गढ़ दिया (2 कुरिन्थियों 3:18)।

जब हम सुसमाचार सुनते हैं तो क्या हम इसे परमेश्वर की ओर से आए संदेश के रूप में ग्रहण करते हैं? कभी-कभी मसीही लोग ऐसा बहाना बनाते हैं मानो यह संदेश "मनुष्यों की ओर से आया" है यद्यपि वे यह अपने मुंह से नहीं कहते। उदाहरण के लिए, जब एक प्रचारक यह प्रचार करता है कि "एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें" (इब्रानियों 10:25), और तब श्रोता इसका प्रत्युत्तर ऐसा देते हैं, "यह आपका विचार है, प्रचारक।" परमेश्वर कहता है, "हर एक अच्छे काम के लिये तैयार रहें" (तीतुस 3:1), परंतु कलीसिया यह कहती है, "प्राचीन यही चाहते हैं।" हमें यह स्मरण रखना होगा कि बाइबल की शिक्षा मनुष्य की बातें नहीं है।

हमें बाइबल की शिक्षा जैसे वे हैं – परमेश्वर का वचन, वैसे ही ग्रहण करना चाहिए। यह स्मरण रहे कि पवित्र शास्त्र की बात लोप नहीं हो सकती है (यूहन्ना 10:35) और परमेश्वर एक "भस्म करने वाली आग है" (इब्रानियों 12:29)। अच्छे मन वाले लोग बाइबल को परमेश्वर का वचन मानकर ग्रहण करते हैं! EE

जब वचन प्रचार किया जाता है (2:13)

मसीही होने के नाते, परमेश्वर का वचन प्राप्त करना हमारा सबसे बड़ा कर्तव्य है। उसके वचन के बिना उद्धार के मार्ग तक पहुँचना असंभव है और उसके वचन के बिना मसीही जीवन की सच्ची उन्नति भी नहीं हो सकती है।

जिस प्रकार थिस्सलुनीकियों ने जो वचन उनको प्रचार किया गया ग्रहण किया उसके लिए पौलुस लगातार धन्यवाद देता रहा। उनके वचन ग्रहण करने के द्वारा ही उनके लिए हृदय परिवर्तन का द्वार खुल गया।

उन्होंने वचन ग्रहण करना चुना। उन्होंने इसे सुना, इसकी महत्ता जानी और अपने लिए इसे अनंतकाल का संदेश जाना।

उन्होंने विश्वास किया कि यह परमेश्वर का वचन है। थिस्सलुनीकियों ने इस संदेश को उन लोगों के परे जाना जिन्होंने इसे उन तक पहुँचाया था। उन्होंने यह देखा कि वे परमेश्वर के आत्मा से प्रेरित हैं। उन्होंने यह जाना कि परमेश्वर पौलुस और उसके सहकर्मियों के शब्दों द्वारा उनसे बातचीत कर रहा है। कोई भी सचमुच सुसमाचार को तब तक ग्रहण नहीं कर सकता है जब तक कि वह इसे परमेश्वर की ओर से आया हुआ ग्रहण न कर ले।

उन्होंने इसे जीवित और प्रभावकारी वचन करके ग्रहण किया। उन्होंने इसे केवल जीवन रहित, धूल भरा या ठंडा ही नहीं समझा बल्कि उन्होंने इसे तथ्य, सत्य तथा सटीक पाया। ये शब्द परमेश्वर की आत्मा के सामर्थ्य से जीवित थे।

जब उन्होंने इसके लिए अपने हृदय खोला तो उन्होंने इन वचनों को अपने जीवन में कार्य करते हुए पाया।

यहाँ लघु वाक्य में यह प्रदर्शित किया गया है कि कैसे एक व्यक्ति मसीही बनता है। वह परमेश्वर के जीवित और प्रभावकारी वचन ग्रहण करता है और परमेश्वर की आत्मा से सशक्त वचन उस व्यक्ति को जीवित वचन, यीशु मसीह की ओर परिवर्तित करता है।

हर एक अच्छे मन को यह पूछना चाहिए, "मैंने वचन कैसे ग्रहण किया है?" EC

सुसमाचार को संचारित करना (2:1–13)

इस अध्याय में पौलुस ने थिस्सलुनीके में विरोधी यहूदियों के आरोपों का जवाब दिया है। उसने पाठकों को यह स्मरण दिलाया है कि किस प्रकार वह स्वयं, तीमुथियुस और सीलास उनके मध्य रहे, कार्य एवं प्रचार किया। हमें यहाँ एक दृश्य दिखाई देता है कि जब हम सुसमाचार प्रचार करते हैं तो हमारा भाव, व्यवहार और तरीका कैसा होना चाहिए। यह अनुच्छेद सुसमाचार प्रचार के लिए एक व्यक्तिगत मार्गदर्शिका के रूप में कार्य कर सकता है।

यह नए नियम का एक सर्वश्रेष्ठ पाठ है जो पौलुस और उसके सहयोगियों के मौखिक और लिखित संदेश की ईश्वरीय प्रेरणा की पुष्टि करता है।

यदि हम पूछें, "नए नियम का सुसमाचार संदेश प्रचार और संचार का सबसे प्रचलित और सबसे अधिक प्रयोग किया जाने वाला पाठ कौन सा है?" तो इसका उत्तर संभवतः 2 तीमुथियुस 4:1–4 होगा। लेकिन दूसरा उत्तर 1 थिस्सलुनीकियों 2:1–13 हो सकता है। थिस्सलुनीकियों का यह अनुच्छेद संभवतः 2 तीमुथियुस 2:1–4 के समान अधिक प्रयोग नहीं किया जाता होगा; लेकिन अधिकांश शिक्षक, सुसमाचार प्रचारक, कलीसिया के प्राचीन, माता-पिता और मसीही लोग इस अनुच्छेद को बहुत महत्व देंगे क्योंकि यह विशेषकर सुसमाचार संदेश के प्रेरणा और संचार के तरीके के बारे में बातें करता है।

संदेश (2:13)। कुछ लेखकों ने इस बात की पुष्टि करने का प्रयास किया है कि पौलुस ने कभी भी अपने संदेश का ईश्वरीय प्रेरणा और अधिकारपूर्ण होने का दावा नहीं किया है। यह दावा नए नियम के प्रमाण की रोशनी में अनाधिकृत ठहरता है। थिस्सलुनीकियों की इस पत्री में ईश्वरीय प्रेरणा और सुसमाचार का अधिकार, जिसे पौलुस ने प्रचार किया था कई दावों का संकेत पाया जाता है। उसने कहा, "क्योंकि तुम जानते हो, कि *हम ने* प्रभु यीशु की ओर से तुम्हें कौन कौन सी आज्ञा पहुंचाई। क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम पवित्र बनो: अर्थात व्यभिचार से बचे रहो" (1 थिस्सलुनीकियों 4:2, 3; बल दिया गया)। आयत 8 कहती है, "इस कारण जो तुच्छ जानता है, वह

मनुष्य को नहीं, परन्तु परमेश्वर को तुच्छ जानता है, जो अपना पवित्र आत्मा तुम्हें देता है।" इन दोनों आयतों को एक साथ देखें। दो और दो चार होता है। क्या 2 और 8 बराबर होता है? आयत 2 में पौलुस कहता है, "तुम जानते हो, कि *हम ने* प्रभु यीशु की ओर से तुम्हें कौन कौन सी आज्ञा पहुंचाई।" आयत 8 कहता है, "... जो तुच्छ जानता है, वह मनुष्य को नहीं, परन्तु परमेश्वर को तुच्छ जानता है।" अब इन दोनों आयतों में क्या स्पष्ट है? वह कह रहा था, "यह परमेश्वर का वचन है।"

प्रेरणा (2:1–6, 8)। उन्हें इस संदेश को प्रचार करने के लिए किसने प्रेरणा दी? कोई भी व्यक्ति उस बात के लिए दुःख नहीं उठाना चाहेगा जिसको वह नहीं मानता है। इसके साथ ही, दुःख उठाना, गंदगी से शुद्ध होने का माध्यम है और इच्छाओं को स्पष्ट करता है। फिलिप्पी में जो कुछ हुआ वह उनकी प्रेरणा के बारे में बहुत कुछ बताता है। वे पीटे गए, लेकिन उसके बाद भी वे सुसमाचार प्रचार करते रहे।

वे किसी भ्रम, अशुद्धता या छल से प्रेरित नहीं हुए थे। पौलुस ने कहा, "मैं मनुष्यों से आदर नहीं चाहता हूँ। मैं परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहता हूँ। इन सारी बातों ने हमें प्रेरित नहीं किया। और न ही ये हमारे संदेश की विशेषता है।"

वे स्वार्थी होकर सेवा नहीं करना चाहते थे। पाँचवीं आयत में उसने मन की बात कह डाली और यह स्पष्ट किया कि नकारात्मक बातों ने उसे ऐसा करने के लिए विवश नहीं किया है।

पौलुस इस कार्य में आर्थिक फायदे के लिए नहीं लगा था। जहाँ तक हम जानते हैं कि नए नियम में थिस्सलुनीके की कलीसिया उन दो कलीसियाओं में से एक थी जहाँ से पौलुस को किसी भी प्रकार का आर्थिक सहयोग नहीं मिला था। उसने 1 कुरिन्थियों 9 में यह तर्क रखा कि उसको आर्थिक सहयोग लेने का अधिकार है परंतु इसके साथ उसने यह भी तर्क रखा कि उसे इस अधिकार का प्रयोग करने और न प्रयोग करने का पूरा अधिकार भी है। थिस्सलुनीके और कुरिन्थुस में पौलुस ने अपने हाथों से मेहनत की और कुरिन्थियों को यह कहते हुए लिखा, "दूसरी कलीसियाओं ने मेरी सहायता की है।" ध्यान दीजिए कि 2 कुरिन्थियों 11:8 उसने क्या लिखा, "मैं ने और कलीसियाओं को लूटा अर्थात मैं ने उन से मजदूरी ली, ताकि तुम्हारी सेवा करूं।" थिस्सलुनीके और कुरिन्थुस, दोनों स्थानों पर उसने तम्बू बनाने का काम किया। वह लोभ, भौतिकवाद की भावनाओं से प्रेरित नहीं था।

वह मनुष्यों की प्रशंसा से भी प्रेरित नहीं था। यह मनुष्यों की प्रशंसा नहीं थी जिसने थिस्सलुनीके में कार्य करने में उसके मानवीय अहंकार को प्रज्वलित किया था। ध्यान दीजिए उसने 2:6 में क्या कहा: "तौभी हम मनुष्यों से आदर

नहीं चाहते थे, और न तुम से, न और किसी से।"

मानवीय आत्मा का आदर चाहने का दृष्टिकोण विश्वास के राह में रोड़ा अटका सकता है। यूहन्ना 5:44 में, यीशु ने कहा, "तुम जो एक दूसरे से आदर चाहते हो और वह आदर जो अद्वैत परमेश्वर की ओर से है, नहीं चाहते, किस प्रकार विश्वास कर सकते हो?"

पौलुस ने सेवा क्यों की? उसने प्रेम के कारण सेवा की। यदि आदर पाने की उसकी चाह नहीं थी, यदि लोभ का वस्त्र उसने नहीं पहना था और यदि उसने चापलूसी भरी बातों का प्रयोग नहीं किया था, तो पौलुस को सेवा करने के लिए किसने प्रेरित किया था? उसने हमें आठवीं आयत में ऐसा बताया, "और वैसे ही हम तुम्हारी लालसा करते हुए, न केवल परमेश्वर को सुसमाचार, पर अपना प्राण भी तुम्हें देने को तैयार थे, इसलिये कि तुम हमारे प्यारे हो गए थे।"

संदेश के संचार में हम केवल तथ्यों का पुलिंदा ही नहीं देते हैं। हम इसे पाप क्षमा के संदर्भ में देते हैं जिसमें – विश्वास को पश्चाताप, अंगीकार और उसके मृत्यु में बपतिस्मा के रूप में प्रकट करते हैं। हम न केवल संदेश देते हुए आते हैं बल्कि हम अपने आपको भी अर्पण करते हैं। सबसे प्रभावकारी शिक्षक, सुसमाचार प्रचारक और कोई भी कार्यकर्ता वही हो सकता है जो पौलुस के समान कहे, "तुम हमारे प्यारे हो गए हो।" पौलुस की दृढ़ इच्छा प्रकट करने का यह दूसरा तरीका है कि उसमें केवल प्रेम की ही इच्छा थी। वह प्रभु से प्रेम करता था और सुसमाचार से भी प्रेम करता था। इस अनुच्छेद से यह सच्चाई स्पष्ट है कि वह लोगों की आत्मा से प्रेम करता था।

व्यवहार (2:7, 11)। उसके व्यवहार के बारे में क्या? नीयत और व्यवहार अति घनिष्ठ है। बल्कि किसी की नीयत उसके व्यवहार और रहन सहन के तरीके का निर्धारण करती है। इस भाग में पौलुस ने दो मार्मिक चित्रों का प्रयोग किया है। उनमें से एक सातवीं आयत में अवतरित है। वह कहता है, "परन्तु जिस तरह माता अपने बालकों का पालन-पोषण करती है, वैसे ही हम ने भी तुम्हारे बीच में रहकर कोमलता दिखाई है।" इससे भी अधिक हृदय स्पर्शी दृश्य ग्यारहवीं आयत में पाया जाता है, जिसमें व्यक्तिगत फिक्र का दृश्य दिखाई देता हैः उसने कहा, "तुम जानते हो कि जैसा पिता अपने बालकों के साथ व्यवहार करता है, वैसे ही हम भी तुम में से हर एक को उपदेश करते, और शान्ति देते, और समझाते थे।"

प्रत्येक बच्चे को अपने माता पिता के कुछ समय की आवश्यकता होती है। आप औसत रूप से अपने बच्चों की देखभाल नहीं करते हैं। इस भाग में प्रेम की महान अभिप्रेरणा पाई जाती है और यह प्रेम व्यवहार और तरीके तक फैल गया है। यह थिस्सलुनीके के प्रत्येक विश्वासी के लिए व्यक्तिगत चिंता का विषय

बन गया था। यह कोमल प्रेम था जो सब लोगों तक पहुँच रहा था। यह आधिकारिक संदेश की प्रेममय प्रस्तुति थी। पौलुस स्वयं अपने आपको देने के लिए तैयार था।

अक्सर *प्रेम* और *तर्क* मनों को खोलता है। क्या यह सच नहीं है कि लोगों को इस बात की परवाह नहीं होती कि आप कितना ज्ञान रखते हैं जब तक उन्हें यह पता नहीं चलता कि आप कितनी परवाह करते हैं।

जॉर्ज सान्तायान ने 1905 में पाँच खण्डों वाली पुस्तक *द लाइफ आफ रीजन* लिखना समाप्त किया। उसके बाद मृत्यु से पहले उन्होंने उन किताबों का पुनः सम्पादन किया और अधिकांश हिस्सा दोबारा लिखा। इन वर्षों के बीतने के बाद किसी ने उनसे पूछा, "क्या आपने अपना दृष्टिकोण बदला?" क्या आपने अपनी विचारधारा बदली? क्या आपके अब दूसरे आदर्श हो गए हैं?" उन्होंने उत्तर दिया, "नहीं! नहीं! मैंने वही बातें लिखीं हैं लेकिन उन्हें मैं अब दूसरे सुर में कहना चाहता था।" बोलने या लिखने का वह सुर बहुत महत्वपूर्ण है। महान शिक्षा, प्रचार और व्यक्तिगत कार्य में अर्थ और आचरण में गहरा संबंध है। जब हम प्रेम का संदेश प्रचार करते हैं तो हमारा आचरण भी प्रेममय होना चाहिए।

उपसंहार। जब सुसमाचार का महान संदेश प्रेम पूर्वक प्रस्तुत किया जाता है तो लोग उसका तिरस्कार नहीं करते हैं। मैं समझता हूँ कि यदि इस उद्धार देने वाले संदेश को, जिनके साथ हम बातचीत करते हैं, उन तक ले जाएं और उनके प्रति सच्ची चिंता व्यक्त करें, तो हम में से बहुत से लोग उन पर गहरा प्रभाव डाल सकते हैं।

हम संदेश देखते हैं। यह परमेश्वर का वचन है: "तो तुम ने उसे मनुष्यों का नहीं परन्तु परमेश्वर का वचन समझकर (और सचमुच यह ऐसा ही है) ग्रहण किया" (1 थिस्सलुनीकियों 2:13)। यहाँ इस संदेश की मंशा हमें देखने को मिलती है – एक महान प्रेम की मंशा, स्वार्थपूर्ण मंशा नहीं और न ही वह मंशा जिसमें मनुष्य का आदर प्राप्त करना हो। हमें यहाँ प्रेम की मंशा दिखाई देती है जहाँ पौलुस उन लोगों तक जाता है जो खोए हुए हैं – "जिस तरह माता अपने बालकों का पालन-पोषण करती है" या शायद इससे भी अधिक "जैसा पिता अपने बालकों के साथ व्यवहार करता है।" AM

अच्छे मन वाले लोग (2:13–20)

यहूदियों के मध्य एक महान गुरु की कहानी है जिन्होंने उनसे जो उनको विद्वान मानते थे, यह पूछा कि उन्हें यह बताएं कि परमेश्वर के साथ अच्छे संबंध बनाए रखने के तरीके क्या हैं। एक व्यक्ति ने आगे आकर कहा कि आपके देखने का नजरिया बाइबल पर आधारित हों, जिसमें संतुष्ट होना अति आवश्यक है। दूसरे ने कहा कि आप एक अच्छे संगी साथी हों। तीसरे ने कहा

कि आप एक अच्छे पड़ोसी हों। अंत में, इलियाजर नामक व्यक्ति ने कहा, अच्छे मन होना सर्वोत्तम है। रब्बी ने कहा, "श्रीमान, आपने ठीक उत्तर दिया, क्योंकि जब आपका मन अच्छा होगा, आपकी दृष्टि भी ठीक होगी और तब आप अच्छे पड़ोसी तथा अच्छे संगी साथी होंगे।"

पौलुस के अनुसार जो उसने थिस्सलुनीकियों 2:13–20 में कहा, हम देख सकते हैं कि थिस्सलुनीकियों के विश्वासियों का "मन अच्छा" था। इन आयतों में पौलुस ने यह वर्णन किया है कि जब वह उनके साथ था तो थिस्सलुनीके के विश्वासियों ने उसके संदेश को कैसे ग्रहण किया। उनका प्रत्युत्तर यह दर्शाता है कि उनके "मन अच्छे" थे। EE

धन्यवादित शिक्षक (2:13–20)

पौलुस का थिस्सलुनीकियों के साथ एक विशेष सम्बन्ध था। 2:13–20 में, उसने थिस्सलुनीकियों को मसीह में भाई एवं बहन मानने की अपने आनंद की अनुभूति प्रकट की है। जब पौलुस, सीलास और तीमुथियुस को फिलिप्पी से निकाल दिया गया था और उसके पश्चात जब वे थिस्सलुनीके आए थे तो यह संबंध यूँ ही स्थापित नहीं हुआ था। यह तात्कालिक संबंध भी नहीं था कि जब वे एक साथ थे तो संबंध स्थापित हुआ और जब वे अलग हुए तो यह संबंध समाप्त हो गया। यह तो जीवन पर्यंत संबंध से भी बढ़कर था; यह तो अनादि मित्रता थी जो इन शिक्षकों के मन में सदैव बसी हुई थी।

जब हम दूसरों को शिक्षा देते हैं, अपने संगी मसीहियों को परामर्श देते हैं, भाइयों एवं बहनों को परमेश्वर की इच्छा पूरा करने के लिए उत्साहित करते हैं तो हम उनके साथ अनादि संबंध स्थापित करते हैं। परमेश्वर चाहता है कि दूसरों को शिक्षा देने, परामर्श करने और उत्साहित करने जैसे महत्वपूर्ण अंगों के द्वारा कलीसिया कार्य करे।

परमेश्वर के वचन को कार्य करने दो (2:13)। जब शिक्षक परमेश्वर के वचन का पालन करते हैं तो क्या होता है? क्या होता है जब छात्र अपने शिक्षकों का अनुकरण करते हैं जो परमेश्वर के वचन का पालन करते हैं? अद्‌भुत बातें होतीं हैं! यदि लोग यह जाने कि सुसमाचार प्रचार परमेश्वर की ओर से उनके लिए संदेश है और वचन के द्वारा अपने आपको परमेश्वर को सौंपें तो तब वह (परमेश्वर) उनके मनों में कार्य करने लगता है। जीवन अनादिकाल के लिए बदल जाता है!

1:2, 3 के धन्यवादी विचारों को 2:13 में पुनः परिचित कराया गया है। पौलुस ने स्वयं और अन्य शिक्षकों का परमेश्वर के प्रति लगातार कृतज्ञता के विशेष कारणों का उल्लेख किया है। थिस्सलुनीके के वासी जो मसीही बन गए थे उनको सबसे अधिक इस बात ने प्रभावित किया था कि उनके लिए परमेश्वर

के पास संदेश था। इसका यह तात्पर्य हुआ कि परमेश्वर सचमुच उनकी चिंता करता था और इसको उसने यीशु के उद्धार के कार्य के द्वारा प्रतिपादित भी किया। वे इस बात से आश्वस्त हो गए थे कि परमेश्वर उनकी सहायता करना चाहता है और उनके भविष्य की तैयारी कर रहा है। परिणामस्वरूप, जो परमेश्वर चाहता था उसको करना उनकी प्राथमिकता हो गई थी। उन्होंने सुसमाचार को अपने लिए परमेश्वर की ओर व्यक्तिगत संदेश के रूप में लिया!

हमें परमेश्वर के वचन को सीखाने के द्वारा हमारे अंदर कार्य करने देना चाहिए, हमें इसके प्रति उत्साहित होना चाहिए ताकि दूसरे भी यह देखकर इसे अपने अंदर कार्य करने दें। जैसे ही परमेश्वर का वचन कार्य करेगा, यह प्रत्येक मसीही तथा पूरे कलीसिया को बदलेगा।

विश्वासयोग्य लोगों का अनुकरण करें(2:14, 15)। यह अलग बात है जब हम उत्तेजित होकर सुसमाचार के संदेश को यह मानकर स्वीकार करते हैं कि परमेश्वर के पास हमारे लिए योजना है जबकि विपरीत परिस्थिति में उसी परमेश्वर के संदेश में विश्वासयोग्य रहना कठिन बात है। नए मसीही या मसीह को स्वीकार करने वाले लोगों को निम्न प्रश्न का उत्तर दें तो अच्छा होगा, "यदि मेरे परिवार वाले मेरे इस निर्णय का विरोध करते हैं तो ऐसी परिस्थिति में मैं क्या करूँगा/गी?"; "मेरे इस निर्णय के बारे में जब मेरे सहकर्मी मेरा उपहास करेंगे तो ऐसे परिस्थिति में मैं क्या करूँगा/गी?"; "क्या मैं एक ऐसे जीवन प्रारंभ करने जा रहा/ही हूँ जिसे शैतान नष्ट करने का प्रयास करेगा?"

थिस्सलुनीके के मसीहियों ने सताव के प्रति किस प्रकार का प्रतिक्रिया व्यक्त किया? उन्होंने उसे सहा; वे विश्वासयोग्य बने रहे (2:14, 15)। कुछ देशों में सार्वजनिक आराधना मना है। संभवतः हम ऐसा कल्पना कर सकते हैं कि ऐसे बंधन में मसीही जीवन जीना कठिन होगा। फिर भी, हमें स्मरण रखना होगा कि हम परमेश्वर की सेवा किसी भी परिस्थिति में कर सकते हैं और उसको प्रसन्न कर सकते हैं – यहाँ तक कि सताव में भी।

हमें यह स्मरण करते हुए कि कुछ लोगों को उनके विश्वास के कारण सताया जा रहा है, परमेश्वर को हमारे स्वतंत्रता के लिए धन्यवाद देना चाहिए और परमेश्वर चाहता है कि हम किसी भी परिस्थिति में उसके प्रति विश्वासयोग्य बने रहें। कठिनाइयों के कारण परमेश्वर की सेवा को छोड़ने के विचार का हमें सामना करना चाहिए। मित्रों, रिश्तेदारों या भाई-बन्धुओं के विरोध भी हमें परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहने से न रोके। चाहे क्यों न कोई हमारे विश्वास के कारण हमें अनदेखा करे, हमारा उपहास उड़ाए या दुरुपयोग करे फिर भी आओ हम विश्वासयोग्य लोगों के आयत चिह्नों का अनुकरण करते हुए परमेश्वर की सेवा करें।

अपेक्षित विरोध (2:15, 16)। जो परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों को

सताते हैं, वे परमेश्वर के विरोधी हैं और वे लोगों के कल्याण का भी विरोधी हैं। संतों को बाधा पहुँचाने के द्वारा वे यह बताना चाहते हैं कि शैतान का मार्ग उचित है और परमेश्वर का मार्ग अत्यंत कठिन है। इसलिए, जो संदेश वे मसीहियों और गैर मसीहियों को देते हैं वह यह है कि परमेश्वर के बातों को न मानकर वे शैतान का कार्य करें।

हम विरोध की अपेक्षा कर सकते हैं। जैसे हम परमेश्वर का कार्य करते हैं और वह प्रसन्न होता है तो वैसे ही शैतान हमसे अप्रसन्न होता है। वह हमारे प्रत्येक अच्छे विचारों, अच्छे शब्दों का उच्चारण और प्रत्येक अच्छा कार्य जो हम करते हैं, का विरोध करता है। वह किसी को भी हमारे इन अच्छे कार्यों का विरोध करने के लिए प्रयोग कर सकता है। तो इससे आप चकित न हों जब शैतान आपका विरोध करता है। आप इसकी अपेक्षा कर सकते हैं!

कुछ परिदृश्य से पाप आकर्षक लगता है लेकिन इसका अंत मृत्यु है क्योंकि, "पाप की मजदूरी मृत्यु है" (रोमियों 6:23)। कभी-कभी हम पाप का घातक परिणाम भूल जाते हैं। बहुत से लोग यह सोचते हैं कि वे पाप से बच जाएंगे और इसका उन पर कोई बुरा परिणाम नहीं होगा। हमारा पाप मृत्यु का कारण बना – परमेश्वर के पुत्र का मृत्यु। यह अत्यंत गम्भीर विषय है। परमेश्वर का मार्ग इस जीवन में लाभ पहुँचाता है और परमेश्वर के साथ अनंत जीवन का प्रतिफल भी मिलता है। यदि हम मसीही जीवन जीते हैं तो विरोध की अपेक्षा कर सकते हैं लेकिन इसके साथ हम परमेश्वर और उसके लोगों के साथ अनंत सुख का भी अपेक्षा कर सकते हैं।

भाइयों से प्रेम (2:17, 18)। यद्यपि कुछ लोगों ने थिस्सलुनीके मसीहियों के निकट रहना घृणित समझा जबकि अन्य उनके साथ संगति करके आनंदित हुए। कुछ लोगों ने उनके कार्यों का विरोध किया जबकि अन्य लोगों ने उनकी प्रशंसा की। पौलुस, सीलास और तीमुथियुस इन भाइयों से अलग होने के बाद भी वे उनसे फिर मिलना चाहते थे और वे चाहते थे कि वे इस बात को जाने।

हमारे वार्तालाप और उत्साहित करने वाली पत्री में अन्य स्थानों में रहने वाले भाइयों के लिए एक और बहुमूल्य संदेश का विलय होना आवश्यक है: हम उन्हें स्मरण करते हैं और हम उनके साथ रहना चाहते हैं। प्रेम, भक्ति और भाईचारा मसीही संगति का अभिन्न अंग है। इस प्रेम का प्रगटीकरण और अभिव्यक्ति इन दृष्टिकोण और भावनाओं का स्वभाविक विस्तार है। हमें अपने भाइयों और बहनों से प्रेम करना है और उन्हें इसके बारे में जानना आवश्यक है!

जिस प्रकार हम चाहते हैं कि हम अपना प्रेम प्रकट करें, तो विरोध हमें ऐसा करने से रोकती है। जो हम कर सकते हैं, उसको करने से कठिनाई हमें न रोके। मसीहियों के लिए जहाँ जीवन है वहाँ प्रेम है!

पुनर्मिलन की अपेक्षा करें (2:19, 20)। मसीहियों के लिए, कोई भी बाधा तात्कालिक है, क्योंकि अंततः सभी समस्याओं पर एक दिन विजय प्राप्त कर ली जाएगी। यीशु सबका स्वामी है और वह सभी शत्रुओं का नाश कर देगा – चाहे वह मृत्यु ही क्यों न हो (1 कुरिन्थियों 15:23–26)। अन्य विश्वासयोग्य परमेश्वर के बच्चों से अलगाव तात्कालिक हो सकता है क्योंकि संगी मसीहियों और यीशु के साथ पुनर्मिलन बहु प्रतिक्षित है।

अध्याय 2 के अंतिम आयत यीशु के पुनरागमन पर केन्द्रित है। यह उन मसीहियों को जो सुस्त हो गए थे या फिर मसीह से दूर हो रहे थे के लिए चेतावनी की छड़ी घुमाना नहीं थी। यीशु मसीह का पुनरागमन का उल्लेख इन मसीहियों को उत्साहित करना था जो उनके शिक्षकों द्वारा उनके प्रति भावनाओं का तीव्र अभिव्यक्ति है। यीशु का पुनरागमन उनके लिए उसके साथ पुनर्मिलन का अवसर है।

ये शिक्षक क्या शिक्षा दे रहे थे? "यीशु दोबारा आ रहा है! हम इसके प्रति उत्साहित हैं! क्यों? क्योंकि हम तुम्हें देखेंगे और हमेशा तुम्हारे संग रहेंगे! हम चाहते हैं कि तुम यह जानो कि हम तुम्हारे प्रति कैसी भावना रखते हैं, इसलिए हम इसके बारे में तुम्हें लिख रहे हैं!"

जब हम अपने संगी मसीहियों की सहायता कर रहे हैं तो हमारे लिए यह कितना बड़ा उदाहरण है। यदि हम यह अपने विद्यार्थियों को यह बताते हैं तो उनके लिए यह कितना उत्साह का कारण होगा, "मैं स्वर्ग में तुम्हारे साथ रहने की बाट जोह रहा/ही हूँ!" जब एक भाई या बहिन हमें यह बताता/ती है तो यह हमारे लिए कितना उत्साह का कारण होगा, "मैं चाहता/ती हूँ कि यीशु शीघ्र लौटे ताकि मैं सदाकाल तक आपके साथ रहूँ!"

उपसंहार। यदि शिक्षक अपने विद्यार्थियों के साथ संबंधों के प्रति सजग हैं तो वह कलीसिया कितनी मजबूत होगी। यह जानकर शिक्षक उत्साहित होंगे कि उनके शिष्य उनके आयतचिह्नों पर चलना चाहते हैं। संगी मसीही दूसरे मसीहियों के विपरीत परिस्थिति होने के बाद भी उनके विश्वासयोग्ता के उदाहरण देखकर उत्साहित होंगे।

ये आयतें हमें मसीहियों के मध्य संबंधों का विकास और उसको बनाए रखने की परिज्ञान प्रदान करता है। जब हम परमेश्वर के परिवार को अपना परिवार मानते हैं तो इस मिलन की आनंद का अनुभूति हमारा अनुभव हो सकता। TP

परमेश्वर के लिए दुःख उठाना (2:14–16)

थिस्सलुनीकियों को उनके परमेश्वर के प्रति समर्पण के कारण दुःख उठाना पड़ा परंतु वे अच्छे मन वाले लोग थे और सब कुछ सह लेते थे। 14 से 16

आयतों में यह पाया जाता है कि यदि कोई विरोधियों के क्षेत्रों में है तो उनके लिए परमेश्वर की सेवा करना कितना कठिन हो सकता है।

थिस्सलुनीके "परमेश्वर की उन कलीसियाओं की सी चाल चलने लगे जो यहूदिया में मसीह यीशु में हैं, क्योंकि तुम ने भी अपने लोगों से वैसा ही दुःख पाया जैसा उन्होंने यहूदियों से पाया था" (आयत 14)। पलिस्तीनी मसीहियों ने अविश्वासी यहूदियों के हाथों अत्यंत दुःख उठाया (देखें प्रेरित 5:27–42; 8)। थिस्सलुनीके के मसीहियों ने भी अपने ही अन्य जाति स्वदेशी लोगों के हाथों दुःख उठाया, लेकिन ऐसा यहूदियों के उकसावे के कारण हुआ (प्रेरित 17:1–10)।

पौलुस ने अविश्वासी यहूदियों की, जिन्होंने मसीहियों को सताया, की घोर निंदा की (आयतें 15, 16)। यद्यपि वह अपने संगी भाइयों से प्रेम करता था (रोमियों 9:1–4), फिर भी पौलुस ने कलीसिया को सताने के लिए उनकी निंदा की। उन्होंने रोमियों को उकसाया कि वे यीशु को क्रूस पर चढ़ाएं और इस प्रकार उन्होंने "यीशु मसीह को मार डाला," जबकि पिलातुस ने उसे किसी भी बात का दोषी नहीं पाया था (मत्ती 27:15–26; प्रेरित 2:22–24)। उनके नाम पुराने नियम के "भविष्यवक्ताओं को भी मार डालने" का उल्लेख है (देखें मत्ती 23:29–32; लूका 11:47–51; प्रेरित 7:51, 52)। पौलुस ने लिखा है कि कलीसिया की स्थापना से पूर्व उन्होंने उसे जब वह थिस्सलुनीके में था तो "बाहर निकाला" (प्रेरित 17:1–9)। वे "सभी लोगों के विरोधी थे" दूसरों को अन्यजातियों से बात नहीं करने देते थे ताकि उनका उद्धार न हो (देखें प्रेरित 13:42–45; 22:21, 22)।

उनके आचरण के कारण, वे "अपने पाप का घड़ा भर लेते हैं," या फिर जैसे NIV कहता है, "वे अपने पापों का ढेर बनाते हैं।" वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर रहे थे और "उन पर परमेश्वर का भयानक प्रकोप आ पहुँचा है" (आयत 16)। परमेश्वर को उनके बलवा का संज्ञान है परंतु 16वीं आयत में "क्रोध" शब्द उनके प्रति परमेश्वर का दंड दर्शाता है (देखें प्रकाशितवाक्य 20:10)। पौलुस ने "आ पहुँचा है" भूतकाल में लिखा है, क्योंकि परमेश्वर का न्याय निस्संदेह पहले ही उन पर उदित हो चुका है। कालांतर में इतिहास यह दर्शाता है कि सन् 70 ईस्वी में यरूशलेम नाश किया जाएगा। परमेश्वर का न्याय उस समय उन पर आ चुका था। इससे भी बढ़कर अन्तिम न्याय के समय बलवा करने वालों के लिए बड़ा दण्ड ठहराया गया है!

क्या हम मसीह के कारण आज दुःख उठाते हैं? कुछ देशों में मसीही लोग अपने विश्वास के लिए शारीरिक यातना सहते हैं। अमेरीका में, शारीरिक यातना तो नहीं होती है लेकिन अन्य प्रकार का शोषण हो सकता है। अच्छे मन वाले लोगों को मजबूत होना है जबकि वे मसीह के कारण दुःख उठाते हैं। EE

सताव के बारे में सच (2:14–16)

जब पौलुस थिस्सलुनीकियों को छोड़ आया था तो उनका जीवन उथल-पुथल हो चुका था। जैसे ही वे अपने मसीही जीवन में स्थिर हो रहे थे तभी उन्हें अस्त व्यस्त करने वाली विरोधी हवा का सामना करना पड़ा। उनके जीवन में त्वरित सताव की आँधी चली। आत्मिक युवावस्था होने के कारण उन्होंने सताव का सामना वैसे नहीं किया जिस प्रकार पौलुस ने सामना किया था; लेकिन उन्होंने अपने दुःखों का ख्याल रखा। उनके बारे में पौलुस के टिप्पणी से हम उनके सतावट के समय की महत्वपूर्ण सच्चाईयों के बारे में पता लगा सकते हैं।

धार्मिकता अक्सर विरोध खड़ा करता है। पौलुस के समान थिस्सलुनीकियों ने भी भयानक और क्रूरतापूर्ण सताव का सामना किया। वे किसी को दुःख नहीं पहुँचा रहे थे और न ही उपद्रव फैला रहे थे; वे वैसे जीवन यापन कर रहे थे जैसे परमेश्वर ने उन्हें जीने के लिए कहा था। उनके समर्पण से क्रोधित होकर, शैतान उनके पीछे लग गया।

सताव सह रहे लोगों के साथ हमेशा एक बड़ी भीड़ खड़ी हो जाती है। वे आरंभिक मसीहियों, भविष्यवक्ताओं और स्वयं यीशु के साथ खड़े हुए। पौलुस ने बताया कि वे सताव के प्रति ठीक वैसे ही प्रतिक्रिया कर रहे थे जैसे यहूदिया के मसीही और विशेषकर यरूशलेम के मसीही विरोधियों का सामना कर रहे थे। उदाहरण के लिए, यरूशलेम की कलीसिया ने अपने ही लोगों के हाथों अति कष्ट उठाया था। यरूशलेम में ही यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था और भविष्यवक्ता भी मार डाले गए थे।

परमेश्वर हमें सताव सहने की ताकत देगा। उसने थिस्सलुनीकियों को संभाला और हमें भी संभालेगा। उनके विश्वासयोग्यता और उनके आस पास के क्षेत्रों से पौलुस भली भाँति परिचित था। *सताने वाले को इसको हिसाब देना होगा कि उसने क्या किया है।* जिस व्यक्ति ने मसीहियों को सताया है उस पर परमेश्वर का क्रोध भड़केगा। उसका मसीहियों को सताने का सच्चाई यह है कि उसके अधर्म का प्याला भर गया है।

अगली बार जब आप परेशान किए जाते हैं या अपने पिता के प्रति विश्वासयोग्यता के लिए सताए जाते हैं तो यह स्मरण रखिए कि हमने इसे देखा है। धार्मिकता के कारण शैतान की ओर से विरोध किया जाना सामान्य बात है। यीशु ने कहा, "उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से सताया था" (मत्ती 5:12ब)। इसलिए, धार्मिकता के कारण सताव आना निश्चित है लेकिन हम इस पर भरोसा कर सकते हैं कि परमेश्वर हमें सताव सहने की सामर्थ्य देगा और जो हमें सताते हैं उनका न्याय करेगा। EC

प्रचारकों का "आनंद" (2:17–20)

थिस्सलुनीके पौलुस के "आनंद" और "बड़ाई का मुकुट" हैं (आयत 19)। उसने उन्हें "भाई" करके संबोधित किया और "बड़ी लालसा के साथ उनका मुँह देखने के लिये और भी अधिक यत्न किया" (आयत 17)। उनके प्रति माता पिता जैसे ममता होने के कारण, पौलुस ने यह इच्छा प्रकट कि काश वह उनसे फिर मिल पाता (आयतें 7, 11, 17)।

वे उसके "आशा" थे। प्राथमिक रूप से मसीह पौलुस का आशा था (1 तीमुथियुस 1:1); लेकिन दूसरे शब्दों में थिस्सलुनीकियों ने न्याय के दृष्टिकोण से उसके लिए आशा उत्पन्न किया, "हमारे प्रभु यीशु के सम्मुख उसके आने के समय" (आयत 19)। वे (परमेश्वर के छुड़ाए हुए लोग) पौलुस के लिए प्रमाण है कि वह प्रभु के लिए अपने वरदानों का प्रयोग कर रहा था (मत्ती 25:14–30)।

वे उसके "आनंद" का कारण थे। पौलुस यह जानकर बड़ा आनंदित हुआ कि उन तक मसीह द्वारा प्रतिज्ञा की गई भरपूर जीवन लाने का वह एक भाग बना। (यूहन्ना 10:10)। यूहन्ना ने अपनी तीसरी पत्री में लिखा, "मुझे इस से बढ़कर और कोई आनन्द नहीं, कि मैं सुनूं, कि मेरे लड़के-बाले सत्य र चलते हैं" (3 यूहन्ना 4)।

वे उसके "बड़ाई का मुकुट" थे। वे उसके सेवा के "मुकुट" होंगे। पौलुस ने ओलिंपिक के प्रतिभागी का उदाहरण प्रस्तुत किया है जिसने अपने लोगों के लिए प्रतिस्पर्धा में आयतक जीता है। यह विजेता जब घर लौटेगा तो वह अपने राजा को सम्मानित करने के लिए वह आयतक उन्हें भेंट करेगा ताकि उसके देश का सम्मान हो सके। यह उसके "बड़ाई का मुकुट" है।

थिस्सलुनीकियों ने पौलुस को अत्यधिक आनंदित किया और हमें उनको भी आनंद पहुँचाना है जिन्होंने हमें सुसमाचार सुनाया है। हमें "अच्छे मन" वाले लोग होना है कि हम उस संदेश के प्रति विश्वासयोग्य बने रहें जिसे हमने सुना है। EE

मसीह में हमारा संबंध (2:17–20)

पौलुस ने थिस्सलुनीके में अपने भाइयों से स्नेह किया। कुछ महीने पूर्व इस कलीसिया की आधारशिला रखने के बाद, उस कलीसिया के हरेक सदस्य उसके मन के प्रिय हो गए थे। जैसे उसने थिस्सलुनीकियों को उनसे मिलने की अपनी इच्छा स्मरण दिलाई कि वह उनसे भेंट करना चाहता है तो हम उसके शब्दों में एक अद्वितीय संबंध पाते हैं कि किस प्रकार एक मसीही अपने संगी मसीहियों के साथ संगति करने में आनंद की अनुभूति करता है।

मसीही एक साथ संगति करने के लिए लालायित रहते हैं। पौलुस भाइयों को निरंतर स्मरण करता है। यद्यपि शारीरिक रूप से तो वह उनसे दूर है लेकिन उसके आत्मा में वे बने हुए हैं। एक दूसरे के साथ शारीरिक अलगाव दुःख का कारण हुआ। पौलुस ने यहाँ ἀπορφανίζω (*अपोर्फानिजो*) शब्द का प्रयोग किया है जिसका तात्पर्य "अलग होना" या "अनाथ" होना है। जब पौलुस को उनसे किसी कारणवश हटाया गया तो उसके हृदय ने ऐसी प्रतिक्रिया की मानो जैसे किसी बच्चे को उसके माता-पिता से अलग कर दिया गया हो।

पौलुस बार-बार आकर उनको देखना चाहता था परंतु शैतान ने उसके रास्ते में बाधा डाली। यहाँ, संभवतः पौलुस यहूदी विरोधियों के बारे में कह रहा होगा जिन्होंने उसे उनके पास जाने से रोका या फिर वह किसी अन्य बाधा के बारे में लिख रहा होगा। एक बात तो निश्चित है: कोई भी बात जिसने परमेश्वर के संदेशवाहकों को राज्य का कार्य करने से रोका, उसको शैतान का कार्य ही कहा जा सकता है (लूका 22:3; प्रेरित 5:3)।

एक मसीही को दूसरे मसीही के संगति के द्वारा अत्यधिक आनंद मिलता है। थिस्सलुनीके पौलुस के आनंद, आशा और मुकुट का कारण थे। उसने मसीह से उनकी भेंट कराई और उन्हें विश्वास में बच्चों के समान देखा। वह उनके लिए जीया, उनमें बड़ा आनंद पाया और उनके विश्वासयोग्यता को अपने जीवन का मुकुट समझा।

थिस्सलुनीके पौलुस के वैसे ही थे जैसे माता-पिता के लिए उनके बच्चे। सबसे बढ़कर वह यह देखना चाहता था कि वे उद्धार पाएं और महिमा में उनका स्वागत हो। हम भी, सबसे बढ़कर, यही देखना चाहते हैं कि हमारे बच्चे यीशु के लिए तैयार हों और उसके आने का प्रतीक्षा करें।

हम एक दूसरे को प्रभु के आगमन के लिए तैयार कर रहे हैं। पौलुस की हार्दिक इच्छा यह थी कि थिस्सलुनीके, प्रभु के आगमन पर उसके विश्वासयोग्य के रूप में उसके द्वारा ग्रहण किए जाएं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि उसके और इन भाइयों के मध्य व्यक्तिगत संबंध संसार के अन्य संबंधों से अधिक घनिष्ठ था। जब हम उनके संबंधों के बारे में सोचते हैं तो हमारा ध्यान यीशु के बारे में मत्ती के इन शब्दों की ओर जाता है, "अपने चेलों की ओर अपना हाथ बढ़ा कर कहा; देखो, मेरी माता और मेरे भाई ये हैं!" (मत्ती 12:49)। वह अपने थिस्सलुनीके भाइयों एवं बहनों को प्रभु के लौटने के समय तैयार पाए जाने के लिए कुछ भी सहायता प्रदान करने के लिए हर संभव तैयार था।

यह बड़ा ही अद्भुत है कि दूसरों की चिंता पौलुस के समान की जाए। मसीही होने का तात्पर्य यह है कि आप अन्य मसीहियों की चिंता करें और अन्य मसीही आपकी चिंता करें। कलीसिया में हमारे अन्य भाइयों के साथ संबंध ही हमारा सबसे बड़ा पारिवारिक संबंध है। EC

समाप्ति नोट्स

[1]जे. इ. फ्रेम, *अ क्रिटिकल एण्ड एक्सिजिटिकल कमेंटरी ऑन दि एपिसल ऑफ़ सैंट पौल टू द थिस्सलोनियन्स*, दि इन्टरनैशनल क्रिटिकल कमेंटरी (न्यू योर्क: चार्ल्स स्क्रिबनेर्'स संस, 1912; रीप्रिंट, एडिनबर्ग: टी. & टी. क्लार्क, 1988), 92. [2]वाल्टर बाउर, *अ ग्रीक-इंग्लिश लेक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टमन्ट एण्ड अदर अर्ली क्रिस्टिअन लिटरेचर,* थर्ड एड., रेव. एण्ड एड. फ्रेडरिक विलियम डेनकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस, 2000), 782. [3]डेविड जे. विलियम्स, *1 एण्ड 2 थिस्सलोनियन्स*, न्यू इन्टरनैशनल बिब्लिकल कमेंटरी: न्यू टैस्टमन्ट सीरीज, वोल. 12 (पीबडी, मास.: हेंड्रिकसन पब्लिशर्स, 1992), 37. [4]ए. टी. रॉबर्टसन, *दि एपिसल ऑफ़ पौल,* वोल. 4, *वर्ड पिक्चर्स इन द न्यू टेस्टामेंट* (नैशविले: ब्रॉडमेन प्रेस, 1931), 16. [5]बाउर, 256. [6]रॉबर्टसन,16. [7]आई. हॉवर्ड मार्शल, *1 एण्ड 2 थिस्सलोनियन्स*, न्यू सेंचुरी बाइबिल कमेंटरी (ग्रान्ड रैपिड्स, मिशिगन: डब्ल्यू. बी. ईर्द्मैंस पब्लिशिंग कं., 1983), 67. [8]इबिद, 68-69. [9]आयत 6ब, "यद्यपि हम मसीह के प्रेरित होने के कारण तुम पर बोझ डाल सकते थे," की गणना यूनानी पवित्र शास्त्र में आयत 7अ से की गई है। [10]सी.जी.विल्के एण्ड विलिबल्ड ग्रिम्म, *अ ग्रीक-इंग्लिश लेक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टमन्ट,* ट्रांस. और रेवरेंड जोसेफ एच. थायेर (एडिनबर्ग: एडिनबर्ग. टी. & टी.क्लार्क, 1901; रीप्रिंट, ग्रान्ड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1977), 279.

[11]मार्शल, 70–71. [12]एफ. एफ. ब्रूस, *1 एण्ड 2 थिस्सलोनियन्स*, वर्ड बिब्लिकल कमेंटरी, वोल. 45 (वाको, टेक्स.: वर्ड बुक्स, 1982), 32. [13]रॉबर्टसन, 19. [14]मार्शल, 72. [15]फ्रेम, 103. [16]लीओन मौरिस, *फर्स्ट एण्ड सेकण्ड एपिसल टू द थिस्सलोनियन्स*, दी न्यू इन्टरनैशनल कमेंटरी ऑन द न्यू टैस्टमन्ट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन.: डब्ल्यू. बी. ईर्द्मैंस पब्लिशिंग कं., 1959), 84. [17]विलियम्स, 51. [18]मार्शल, 77. [19]मौरिस, 89. [20]देखें हेनरी अल्फोर्ड, *द ग्रीक टैस्टमन्ट*, रेव्ह. एवेरेट एफ. हरीसन (शिकागो: मूडी प्रेस, 1958), 3:260–61.

[21]रॉबर्टसन, 22. [22]फ्रेम, 114–15. [23]रॉबर्टसन 23. [24]इबिद, 24. [25]विलियम्स, 55. [26]ब्रूस, 57.